भूदान-यज्ञ

भूदान-यज्ञ मूलक ग्रामोद्योग प्रधान अहिंसक क्रान्ति का सन्देशवाहक—साप्ताहिक

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र

वर्ष : १५ अंक : ४४

सोमवार ४ अगस्त, '६९

अन्य पृष्ठों पर

सरकार और सिनेमा —सुरेशराम ५३८

तंजौर में हरी बनाम लाल क्रान्ति —सम्पादकीय ५३९

दिमाग के साथ दिल भी बड़ा बने —विनोबा ५४१

परिचर्चा : नक्सालवादियों के प्रति जयप्रकाशजी की सहानुभूति... ५४३

"गाँव-गाँव में तुम्हारा पर्चा कब पहुँचेगा ?" —रामचन्द्र राही ५४६

सर्वोदय साहित्य भण्डार, इन्दौर —जसवन्तराय ५४७

विनोबा-निवास से —मणिलाल ५४९

आन्दोलन के समाचार ५५०,५५२

आवश्यक सूचना

तीन वर्षों से 'भूदान-यज्ञ' के परिशिष्ट के रूप में हर महीने 'गाँव की बात' के दो अंक हम देते रहे हैं। पर अब 'गाँव की बात' 'भूदान-यज्ञ' के परिशिष्ट के रूप में नहीं प्रकाशित होगी। 'गाँव की बात' के पाठक 'गाँव की आवाज' के नाम से अलग चार रुपये चन्दा भेजें। 'गाँव की आवाज' का पहला अंक १६ अगस्त को प्रकाशित होगा। —व्यवस्थापक

सम्पादक

कृष्णदत्त भट्ट (?)

सर्व सेवा संघ प्रकाशन,

राजघाट, वाराणसी–१ उत्तरप्रदेश

फोन : ४२८५

शान्ति-दल कैसा हो ?

कुछ समय पहले मेरे कहने पर शान्ति-दल बनाने का प्रयत्न किया गया था। मगर उसका कोई नतीजा नहीं निकला। फिर भी उससे यह सीखने को मिला कि शान्ति-दल बड़े पैमाने पर काम नहीं कर सकते। साधारणतः बल के आधार पर बने किसी बड़े स्वयंसेवक-दल को अच्छी तरह चलाने में अनुशासन भंग होने पर बल-प्रयोग की गुंजाइश मानी जाती है। ऐसी संस्थाओं में मनुष्य के चरित्र पर कोई जोर नहीं दिया जाता। शारीरिक योग्यता ही मुख्य चीज होती है। अहिंसक दल में उल्टी बात होती है। उसमें चरित्र या आत्मबल, सब कुछ होना चाहिए और शरीर को गौण स्थान मिलना चाहिए। ऐसे बहुत-से आदमियों का मिलना कठिन है। इसीलिए अहिंसक दल को यदि कारगर बनना है तो वह छोटा ही होना चाहिए। ऐसे दल सब जगह बिखरे हुए हो सकते हैं, हरएक गाँव या मुहल्ले के लिए एक दल हो सकता है। दल के सदस्य एक-दूसरे से भली-भाँति परिचित होने चाहिए। प्रत्येक दल अपना मुखिया आप ही चुन लेगा। सब सदस्यों का दर्जा एक-सा होगा, मगर जहाँ हरएक व्यक्ति वही काम करता हो, वहाँ एक आदमी ऐसा होना ही चाहिए, जिसके अनुशासन में सब रहें, नहीं तो काम की हानि होगी। जहाँ दो या अधिक दल हों, वहाँ नेताओं को आपस में सलाह करके काम की एक-सी दिशा तय करनी चाहिए। यही सफलता की कुंजी है।

अगर इस ढंग पर अहिंसक स्वयंसेवक-दल बनाये जायँ, तो वे आसानी से झगड़ों को बन्द कर सकते हैं। इन दलों के लिए अखाड़ों में दी जानेवाली पूरी शारीरिक तालीम की जरूरत नहीं होगी, परन्तु उसका कुछ भाग आवश्यक होगा।

किन्तु इन तमाम शान्ति-दलों में एक बात सामान्य होनी चाहिए, और वह है ईश्वर में अनन्य श्रद्धा। वही एकमात्र सच्चा साथी और कर्ता है। उसमें श्रद्धा हुए बिना ये शान्ति-दल निर्जीव होंगे। हम ईश्वर को किसी भी नाम से पुकारें, हमें यह महसूस करना चाहिए कि हम उसीके बल पर काम कर सकते हैं। ऐसा आदमी कभी दूसरे की जान नहीं लेगा। जरूरत पड़ने पर वह अपनी जान दे देगा और इस प्रकार मृत्यु पर विजय पाकर अमर बन जायेगा।

जिस मनुष्य के जीवन में यह धर्म सजीव सत्य बन जाता है, उसे संकट में घबराहट नहीं होती। उसे काम करने का सही रास्ता अन्तःप्रेरणा से मालूम हो जायेगा।

मो. क. गांधी

"हरिजन" : ५-५-४६

www.vinoba.in

सरकार और सिनेमा

नयी पीढ़ी के खिलाफ बुजुर्गों की तरफ से अक्सर यह कहा जाता है कि इसकी वृत्ति विध्वंसात्मक है और इसमें संयम, सहनशीलता, त्याग आदि गुणों का अभाव है। सन् १९२०-२१ या १९३०-३२ में जेल काटने के एवज में स्वराज्य के बाद से हर तरह की सत्ता और सुख लूटनेवालों को इस तरह के उपदेश देना शोभा नहीं देता। फिर भी शाश्वत मूल्यों की बच्चों को याद दिलाना हर किसीका अधिकार है, और पुरानी पीढ़ी की शिकायत को हम थोड़ी देर के लिए जायज मान लेते हैं। लेकिन सोचने-समझने की बात यह है कि सद्गुणों के विकास के लिए हम क्या कर रहे हैं? या तो नयी पीढ़ी को वे विरासत में हासिल होते, सो तो नहीं हुए, जिसके लिए पुरानी पीढ़ी जिम्मेदार ठहरायी जायेगी; या फिर हम ऐसा वातावरण बनाते जिससे नेकी, सच्चाई और सेवा की प्रेरणा हमारी औलाद को आप-से-आप मिलती, मगर हम यह न कर, चारों तरफ ऐसी हवा तैयार कर रहे हैं, और ऐसी सामग्री जुटा रहे हैं, जिससे नौजवान लालच में फँसकर अपने रास्ते से बहक जाय और गलत संस्कारों का शिकार होता रहे।

जून के पहले हफ्ते में गाजियाबाद के पास प्रदेश के मुख्यमंत्री महोदय ने उत्तरप्रदेश के नये हालीवुड, 'अजंता स्टूडियो' का शिलान्यास किया। अभिनन्दन करने के लिए केन्द्र के सूचना और प्रसार विभाग के राज्यमंत्री पधारे थे। इस फिल्म नगरी के सुन्दर भविष्य का आश्वासन दे रहे थे फिल्मी कलाकार, और इस सबका संयोजन कर रहे थे उस नगरी के नये नरेश, जो प्रदेश के सरनाम मदिरा-उद्योगपति हैं! उन्होंने ढाई सौ एकड़ जमीन इस काम के लिए ली है, और सन् १९७१ तक वहाँ इन्द्रपुरी बनाने का उनका स्वप्न है। इस नगरी की कल्पना वर्तमान कांग्रेस-मंत्रिमण्डल के आगमन के पहले ही राष्ट्रपति-शासन के दौरान की गयी थी। उन दिनों इस बारे में एक समझौता प्रदेश-सरकार और फिल्मनगर-निर्माताओं के बीच हुआ था, जिसको प्रकाशित नहीं किया गया। लेकिन एक बड़ी रकम गाजियाबाद-योजना को सरकार ने दी या देने का वायदा किया, और ऐसे समय किया जब कि प्रदेश के शिक्षक बन्धु हड़ताल कर रहे थे और उनकी वेतन-वृद्धि के लिए सरकार के पास देने को पैसा नहीं था!

प्रदेश-सरकार इस योजना की कई तरह से मदद दे रही है—(१) प्रदेश का 'इण्डस्ट्रियल फायनेन्स कारपोरेशन' एक बड़ा 'लोन' उसको देगा। (२) वहाँ लगनेवाले सामान पर सरकार बिक्री-कर नहीं लेगी। (३) मनोरंजन-कर पर सरकार छूट देगी। सवाल है कि प्रदेश की नयी सरकार ने इन बातों को क्यों चुपचाप मान लिया। क्या उसका कोई प्रतिनिधि फिल्म-कम्पनी में है, जो यह बता सके कि पैसे का सदुपयोग हो रहा है और वह मारा नहीं जायेगा? फिर, यह बिक्री-कर और मनोरंजन-कर की छूट क्यों दी जा रही है? एक गरीब मजदूर को अपनी गाढ़ी कमाई से अगर एक छोटा घर बनाना हो, तब तो ईंटों और सीमेण्ट पर बिक्री-कर उससे लिया जायेगा, लेकिन एक संपन्न पूँजीपति कोई उद्योग खोलता है, जो जनजीवन को हानि पहुँचाने के अतिरिक्त कुछ नहीं करेगा, तो उसे रुपया उधार देने के साथ-साथ बिक्री-कर पर भी छूट दी जाती है। यह है भारत के समाजवाद का नमूना!

इसके अलावा प्रदेश-सरकार लगभग एक करोड़ का बोझ ऊपर से बर्दाश्त करेगी। बिजली पहुँचानेवाला पावर-स्टेशन खड़ा करने और बिजली के लिए दो डीजल सेट स्थायी तौर से लगाने के लिए ये सारी सुविधाएँ सरकार मुफ्त करेगी—किसी जरूरत मन्द को बिजली या टेलीफोन की जरूरत हो तो खम्भे लगाने, तार ले जाने और लाइनें डालने का खर्च का बोझ उस पर पड़ता है लेकिन गाजियाबाद के प्रोजेक्ट के लिए सरकार खुद ये चीजें मुहैया कर रही है। फिर भी कहती है कि उसके पास पैसे नहीं है। हम मान लेते हैं कि सरकार ने जानकर-बूझकर यह सहूलियत देने का और जनता पर पूँजीपति का बोझ डालने का तय किया है। लेकिन उस नगरी से लाभ किसका होगा? आर्थिक लाभ होगा उसके बनानेवाले श्रीमान को, जिसका मतलब है धन और साधनों का केन्द्रीयकरण होना और पूँजीवाद की जड़ों को मजबूत करना। जाहिर है कि वहाँ से जो चीज निकलेगी वह वैराग्य और कष्ट-सहन का पाठ पढ़ाने के बजाय, भोग, अपहरण, अपराध और अन्य कुत्सित वृत्तियों को प्रोत्साहन देगी। दूसरे शब्दों में, नौजवानों के लिए, नैतिक दृष्टि से हानिकर होगी और कुमार्ग पर ले जाने के लिए प्रेरित करेगी। इस प्रकार इस योजना से दोहरा नुकसान होगा: (१) आर्थिक दृष्टि से समाजवाद के खिलाफ पूँजीवाद बलवान होगा, (२) व्यावहारिक दृष्टि से समाज में अनैतिकता, असंयम और अन्याय बढ़ेंगे। फिर भी सरकार इसको मदद दे रही है, और मुख्यमंत्री ने इसे अपने आशीर्वाद दिये, जिनका जीवन सच्चरित्रता का प्रमाण है। लेकिन व्यक्ति के नाते वे जिन चीजों को बुरा समझते हैं, उनका मुख्यमंत्री के नाते स्वागत कर रहे हैं।

यहाँ हमें सुप्रसिद्ध ब्रिटिश विचारक और तत्त्ववेत्ता प्रो० लास्की की याद आ जाती है। उन्होंने कहा है कि जहाँ जो सत्ता या शासन होता है वह वहाँ के समाज के निहित स्वार्थों का प्रतिनिधि होता है। उनका यह कथन हमारे प्रदेश या सारे देश पर सोलह आने खरा उतरता है। गाजियाबाद को फिल्म-नगरी को सरकारी इमदाद इस सत्य को डंके की चोट पर ऐलान कर रही है।

—सुरेशराम

अखिल भारत सर्वोदय-सम्मेलन

सर्व सेवा संघ प्रबन्ध समिति की राजकोट बैठक में हुए निर्णय के अनुसार आगामी २५-२६ अक्तूबर को प्रथम अंतरराष्ट्रीय सर्वोदय-सम्मेलन तथा २७-२८ अक्तूबर को अखिल भारत सर्वोदय-सम्मेलन राजगीर (बिहार) में आयोजित किया जायेगा। उक्त सम्मेलन में सरहदी गांधी खान अब्दुल गफ्फार खाँ के भी शामिल होने की पूरी आशा है। सम्मेलन में १० से १५ हजार प्रतिनिधियों की उपस्थिति सम्भावित है।

तंजोर में हरी बनाम लाल क्रान्ति

दक्षिण का तंजोर जिला, खास तौर पर पूर्वी तंजोर, 'हरी क्रान्ति' के लिए, जिसकी आजकल बहुत चर्चा है, मशहूर है। लेकिन तंजोर इस बात की भी मिसाल है कि जहाँ हरी क्रान्ति होती है वहाँ लाल क्रान्ति भी पहुँच जाती है। हरी क्रान्ति नाम है खेतिहर पूँजीवाद का, और लाल क्रान्ति नाम है खेतिहर साम्यवाद का। ये दोनों 'वाद' मिलकर तंजोर को वाद-विवाद और वर्ग-संघर्ष का अखाड़ा बना रहे हैं। अगर यह संघर्ष बढ़ा तो क्या होगा खेती का, और क्या होगा खेतिहर किसान और मजदूर का, कोई कह नहीं सकता। लेकिन अगर विकास इसी तरह एकांगी होता रहा, और राजनीति आज की ही तरह चलती रही, तो संघर्ष के सिवाय दूसरा होगा भी क्या ? यह सोचने की बात है कि क्या ग्रामदान-ग्राम-स्वराज्य के द्वारा, जिसकी कोशिश तंजोर में शुरू हो गयी है, हम इन दोनों वादों के विवाद से बचकर साम्य और समन्वय की एक ऐसी स्थिति पैदा कर सकते हैं जिसमें सबको समाधान हो, और जिसमें श्रम और साधन एक-दूसरे के शत्रु नहीं, पूरक हो सकें ?

१. पूर्वी तंजोर में मिरासदार (जमीन का मालिक)—मजदूर का झगड़ा लगभग २५ वर्ष पुराना है, लेकिन इस वक्त हालत हमेशा से ज्यादा खराब है। पिछले दस वर्षों में सघन और अच्छी खेती के विकास के साथ-साथ इन दोनों के सम्बन्ध बराबर बिगड़ते चले गये हैं। पहले एक फसल होती थी, और सारा काम इतमीनान के साथ होता था, लेकिन अब दो फसलें होती हैं, और नये बीजों में समय भी कुछ अधिक लगता है, इसलिए खेतों की तैयारी और रोपाई आदि काम जल्दी-जल्दी और क्षमता के साथ करना पड़ता है। ऐसी हालत में जरूरत इस बात की थी कि मालिक-मजदूर के सम्बन्ध अच्छे हों, पर हुआ है बिलकुल उलटा। मजदूर एक ओर संगठित हैं, और मालिक दूसरी ओर। खेती भी अच्छी और संघर्ष भी तेज !

२. मजदूरों में दोनों कम्यूनिस्ट पार्टियों का प्रभाव है। मार्क्स-वादी-लेनिनवादी-माओवादी (नक्सालवादी) कम्यूनिस्ट भी हैं लेकिन अभी शुरू की हालत में हैं। कम्यूनिस्ट मित्रों का कहना है कि (१) मालिक-वर्ग दूसरों की मेहनत पर जीनेवाला है; काम करता नहीं, और फल ज्यादा चाहता है। सरकार और पुलिस से मिलकर मजदूर को दबाने की कोशिश करता है। (२) मालिक लोग दूसरे क्षेत्रों से मजदूर बुलाकर काम कराते हैं। वे चाहते हैं कि स्थानीय मजदूरों का संगठन टूट जाय। (३) मालिक खेती में ट्रैक्टर का इस्तेमाल करते हैं। इससे मजदूरों की बेकारी बढ़ती है। अगर भूमि की व्यवस्था बदल गयी होती और 'सीलिंग' का कानून सख्ती के साथ लागू हुआ होता तो बात दूसरी थी, किन्तु वह सब हुआ नहीं, इसलिए ट्रैक्टर मजदूर-विरोधी है। (४) डी० एम० के० सरकार का भी वही हाल है जो कांग्रेस का था। वह खुलकर श्रमिकों का साथ नहीं देती जो उसे करना चाहिए।

इस झगड़े के दो मुख्य कारण हैं—बाहर से मजदूर बुलाना, और ट्रैक्टर। कम्युनिस्ट कहते हैं कि जरूरत पड़ने पर बाहर से मज-दूर बुलाये जा सकते हैं बशर्ते स्थानीय मजदूरों को भरपूर काम मिले, और बाहरी मजदूरों को भी उतनी ही मजदूरी मिले जितनी की माँग स्थानीय मजदूर करते हैं। कम्युनिस्टों की शिकायत है कि मालिक बाहर से मजदूर इसलिए बुलाते हैं कि स्थानीय मजदूर भूखों मरने लगें और कम मजदूरी पर काम करने के लिए मजबूर हों।

कम्यूनिस्ट ट्रैक्टर को दुश्मन मान रहे हैं। उनका कहना है कि ट्रैक्टर से २५ से ३० फीसदी तक बेकारी बढ़ती है। अगर कहा जाय कि रूस में ट्रैक्टरों से ही खेती होती है तो वे जवाब देते हैं कि रूस में मजदूरों की कमी है, और रूस समाजवादी देश है ! भारत में काम करनेवाले बहुत और काम कम है, इसलिए रूस की मिसाल भारत पर लागू नहीं होती।

३. मालिकों (मिरासदार) की भी अपनी कठिनाइयाँ हैं। वे कहते हैं कि मजदूर कम्यूनिस्ट राजनीति के रंग में रंग गये हैं। अब उनसे काम लेना आसान नहीं है। एक तो पाँच साल में एक बार कहीं अच्छी फसल होती है, दूसरे मजदूरी तो तय रहती है जो देनी ही पड़ती है, लेकिन काम की कोई माप नहीं होती। उनका यह भी कहना है कि नयी खेती में थोड़े समय में ट्रैक्टर के बिना काम पूरा करना संभव नहीं है। उत्पादन का लक्ष्यांक ऐसे मजदूरों से नहीं पूरा किया जा सकता जो मनमाने हों। खेती के सरकारी अधिकारी भी यही कहते हैं कि अधिक-से-अधिक उत्पादन के लिए ट्रैक्टर अनि-वार्य है।

जहाँ तक इन दो मुख्य प्रश्नों—बाहरी मजदूर और ट्रैक्टर का सम्बन्ध है, दोनों कम्यूनिस्ट पार्टियाँ एकमत हैं। उनमें अन्तर दूसरे ढंग का है। कम्यूनिस्ट (सी० पी० आई०) कहते हैं कि मजदूरी जीने भर यानी १२५ रु० मिले, काम की सुविधा हो, और जो सवाल पैदा हों वे मालिक, मजदूर और सरकार के बीच आपसी चर्चा से तय हों। मार्क्सवादी कम्यूनिस्टों की माँग है कि मजदूरी अधिक-से-अधिक मिले। साथ ही वे यह भी कहते रहते हैं कि आगे चलकर मालिक-वर्ग को समाप्त करना ही है। इन दोनों से भिन्न मार्क्सवादी-लेनिन-वादी-माओवादी कम्यूनिस्टों का जोर है कि मजदूरों की मुक्ति बन्दूक में है, क्योंकि मालिक बन्दूक की ही भाषा समझेंगे, दूसरी नहीं।

४. कम्यूनिस्ट नेतृत्व में मजदूर अच्छी तरह संगठित हैं, किन्तु मालिकों में एकता नहीं है। एक तो छोटे-बड़े मालिकों में मेल नहीं है, दूसरे जाति के भेद भी हैं जो उन्हें एक नहीं होने देते। पूर्वी तंजोर में अधिकांश मालिक सवर्ण हैं, और मजदूर हरिजन। हरिजन कुल जनसंख्या के २९ प्रतिशत हैं। मजदूरों की कुल संख्या ४ लाख है, जिनमें ८० प्रतिशत हरिजन हैं। ब्राह्मण-अब्राह्मण मालिक में मजदूर

की दृष्टि से कोई अन्तर नहीं है। मालिक मालिक है। वर्ग-संघर्ष और वर्ण-संघर्ष मिले हुए हैं।

www.vinoba.in

तंजौर में ३० एकड़ की सीलिंग है, लेकिन हर जगह की तरह वहाँ भी तरह-तरह की चालें अपनाकर मालिकों ने जमीन हाथ से जाने नहीं दी है।

इस वक्त जोत के अनुसार मालिकों का प्रतिशत इस प्रकार है :

१० एकड़ या ज्यादा	—	१२ प्रतिशत
५ से १० एकड़ तक	—	९ प्रतिशत
२॥ से ५ एकड़ तक	—	३२ प्रतिशत
२॥ एकड़ से कम	—	४७ प्रतिशत

सन् १९६१ में ५ फीसदी मालिकों के हाथ में ३० फीसदी भूमि थी। सीलिंग-कानून के बाद भी वही स्थिति बनी हुई है!

पहले मजदूर मालिक से जुड़ा हुआ था जो उसे खाना, कपड़ा, और कुछ मजदूरी देता था, लेकिन सन् १९५२ में उसके संरक्षण के लिए जो कानून बना उससे मजदूर 'कुली' हो गया। अब उसे किसी कानून का संरक्षण नहीं है। इस वक्त उसे धान-रोपाई की मजदूरी प्रतिदिन ६ लिटर धान और एक रुपया मिलता है; स्त्रियों को ५ लिटर और २५ पैसा। कई जगह इससे कम भी मिलता है। इतना ही नहीं, अब वह उस यातना से भी मुक्त है जब मालिक उसे कोड़े लगा सकता था, और पानी में गोबर मिलाकर जबरदस्ती पिला सकता था। इतनी भी मुक्ति उसने सन् १९४४ से आज तक के लगातार संघर्ष से प्राप्त की है। फिर भी साल भर काम न रहने के कारण उसका गुजर नहीं हो पाता। कम्यूनिस्ट पार्टी की ओर से भूमिहीनों की स्थिति का जो अध्ययन हुआ है उसके अनुसार ४ व्यक्तियों के परिवार के गुजर-बसर के लिए साल भर में १५०० रुपये की जरूरत होती है। मजदूर को साल में १७७ दिन काम मिलता है। इतने दिनों के काम से पति-पत्नी को मिलाकर परिवार की आय साल भर में कुल ७८० रु० होती है। बाकी रुपये परिवार कहाँ से लाता है? महाजन से कर्ज लेता है, या बीच-बीच में भूखमरी झेलता है।

मिरासदार मानते हैं कि मजदूर तकलीफ में हैं, लेकिन कहते हैं कि करें क्या? अभी खेती की जो उपज है और बाजार में जो भाव हैं, उन्हें देखते हुए माँग के अनुसार मजदूरी देने की गुंजाइश नहीं है। खेती का खर्च दिनोंदिन बढ़ता चला जा रहा है। सन् १९६० की तुलना में आज केवल मजदूरी का खर्च ५० फीसदी से ज्यादा बढ़ गया है! अधिकांश मिरासदार छोटे किसान हैं जो खुद चिंताओं से घिरे हुए हैं। उनके सामने एक ओर अपने परिवार और खेती की समस्या है, और दूसरी ओर कम्यूनिस्टों के नेतृत्व में मजदूरों का विद्रोह है!

कुल मिलाकर ऐसी स्थिति बन गयी है कि किसीको कोई रास्ता नहीं दिखाई देता। तमिलनाडु की किसी सरकार ने अभी तक तंजौर की समस्या में पड़ने की कोशिश नहीं की है। मालिक-मजदूर की आपसी चर्चा से भी क्या होगा कहना कठिन है। नक्सालवादी तो कह ही रहे हैं कि भेड़िया और मेमना साथ नहीं रह सकते। लेकिन संघर्ष में कौन भेड़िया होगा, कौन मेमना?

पिछले दिसम्बर में तमिलनाडु सरकार ने पूर्वी तंजौर की खेतिहर समस्याओं पर विचार करने के लिए एक कमीशन बिठाया था। उसने मोटे तौर पर मजदूरी में १० फीसदी की वृद्धि की सिफारिश की है। उसकी अन्य सिफारिशें ये हैं :

१. तालुका-स्तर पर 'लेबर कोर्ट' हो जो न्यूनतम मजदूरी के कानून को लागू करे।

२. यदि कोई मालिक जबरदस्ती स्थानीय मजदूरों को काम देने से इन्कार करता है तो सरकार को १४४ धारा के अनुसार उसे ऐसे मजदूरों को काम देने के लिए मजबूर करना चाहिए।

३. मजदूरी की निम्नलिखित दरें उचित मानी जायँ :

जोताई : अगर मजदूर अपना हल-बैल लाता है	—	पुरुष	—	५–२५
जोताई बिना हल-बैल	—	पुरुष	—	३–००
रोपाई, निराई	—	स्त्री	—	१–८०
हेंगा चलाना, मेड़ ठीक करना	—	पुरुष	—	३–००
बेहन उखाड़ना	—	पुरुष	—	३–००
रोपाई-कटाई से अलग मौसम में विविध कार्य	—	पुरुष	—	२–५०
	—	स्त्री	—	१–७५
अन्य कार्य	—	पुरुष	—	३–००
	—	स्त्री	—	१–८०

पुरुष मजदूर का काम ८ घंटे का माना जायगा, और स्त्री का ७ घंटे का।

ऐसे तंजौर में अपना ग्रामदान-आन्दोलन शुरू हुआ है। वयोवृद्ध शंकररावजी युवक साथियों के साथ, पदयात्रा कर रहे हैं, शिविर ले रहे हैं। मालिकों को स्वामित्व-विसर्जन का संदेश सुना रहे हैं, और गाँववालों के सामने मिरासदार-मजदूर की 'वर्ग-चेतना से ऊपर उठकर गाँव' का चित्र रख रहे हैं। उनकी बात लोगों के दिल को छू रही है। लोग महसूस करने लगे हैं कि समस्या ऐसी है जो मालिक-मजदूर को दुश्मन मानकर सिर्फ कानून से हल नहीं होगी। कानून की मुहर जरूर लगायी जाय लेकिन समाधान के लिए मानवीय संदर्भ बनाना ही पड़ेगा। वह विरोध से नहीं, अविरोध से बनेगा। कठिन प्रयोग है, लेकिन ग्रामदान आन्दोलन के लिए अत्यन्त मूल्यवान प्रयोग है। क्रान्ति तो होनी ही है; प्रश्न इतना ही है कि उसका रंग क्या होगा!•

ग्रामदान-प्रखण्डदान-जिलादान

— २७ जुलाई '६९ तक —

	ग्रामदान	प्रखण्डदान	जिलादान
भारत में	१,०७,९६९	८२१	२१
बिहार में	४५,०६०	४८२	१२

दिमाग के साथ दिल भी बड़ा बने

www.vinoba.in

—अन्य ग्रहों के सम्पर्क से मनुष्य का दिमाग और बड़ा बना—

विनोबा

मेरे प्यारे भाइयो और बहनो, आज की बहुत बड़ी घटना है कि जब हम यहाँ आ रहे थे, लगभग उसी वक्त चाँद पर मानव घूम रहा था। यह इस जमाने की सबसे बड़ी घटना मानी जायेगी। इसके पहले कोलम्बस ने अमरीका की खोज की। मार्कोपोलो उत्तर ध्रुव पर गये। अगस्त ऋषि ने बोर्नियो में कालोनी की। ये और ऐसी दूसरी घटनाएँ बनी थीं। वे उस जमाने में बहुत महत्व की साबित हुईं और उसके परिणाम सारे समाज पर पड़े। यह हम सब लोग इतिहास पर से जानते हैं। लेकिन आज इस घटना के सामने ये पुरानी घटनाएँ छोटी मानी जायेंगी। उनका भी बहुत बड़ा प्रभाव समाज पर पड़ा था, तो आज की घटना का क्या-क्या परिणाम मानव-जीवन पर होगा इसका अंदाज लगाना संभव नहीं। लेकिन उसमें एक बात सोचने की हो जाती है। अब वह जमाना लद गया जब समाज में यह जाति मेरी, वह जाति मेरी, ऐसे जाति-भेद के कारण हम बँट गये थे और यह धर्म हमारा, इस तरह धर्म, पंथ के कारण बँट गये थे और यह कम नहीं हुआ, इसलिए हमने और भेद बना लिये राजनैतिक पक्षों के। तो जाति-भेद, पंथ-भेद, धर्म-भेद, पक्ष-भेद, ऐसे नाना प्रकार के भेदों में आज समाज बँट गया। समझना चाहिए कि अब ये सारे पक्ष, जातियाँ, धर्म, पंथ सब पुराने जमाने के हो गये हैं। उनके दिन लद गये हैं। हम यह नहीं समझेंगे तो हमारे दुःख बढ़ते जायेंगे। उसका अन्त नहीं होगा।

आज दुनिया बहुत नजदीक आ रही है विज्ञान के कारण। उसका उत्तम निदर्शन हमको मिला जब चन्द्रमा से हमारा सम्बन्ध बन गया। इस निदर्शन से हमको लाभ उठाना चाहिए और जितना हमारा दिमाग बड़ा बना है उतना ही अब हमें अपना दिल बड़ा बनाना चाहिए।

दिमाग और दिल का झगड़ा

आज जो झगड़े दुनिया में चल रहे हैं, कोई कहता है कि वे मजदूर और मालिक के झगड़े हैं, कोई कहता है विद्यार्थी और शिक्षकों के झगड़े हैं। और कोई कहता है हिन्दू और मुसलमान के झगड़े हैं। कोई कहता है छूत और अछूत के झगड़े हैं। कोई कहता है आदिवासी और गैर-आदिवासी के झगड़े हैं। कोई कहता है रूस और अमेरिका के झगड़े हैं। कोई कहता है चीन और भारत के झगड़े हैं। लेकिन दरअसल दुनिया में आज एक ही झगड़ा है—दिमाग और दिल का। नाम उसको चाहे जो कुछ दें। आज मानव का दिमाग बड़ा बन गया है और उसका दिल छोटा रह गया है।

पुराने जमाने में क्या था? अकबर बादशाह, बड़ा सम्राट था। लेकिन उसको मालूम नहीं था, इंग्लैण्ड नाम का देश इस दुनिया में है। उसको तब मालूम हुआ, जब इंग्लैण्ड के कुछ लोग यहाँ आ पहुँचे। अकबर के दरबार में गये और उनसे व्यापार की इजाजत माँगी। इतने बड़े सम्राट को भूगोल का इतना कम ज्ञान था। आज तो स्कूल के बच्चे को भी उससे कहीं ज्यादा ज्ञान दुनिया के भूगोल का है। इस वक्त हमारा ज्ञान पुराने जमाने से बहुत बढ़ गया है। न्यूटन अपने जमाने का उत्तम गणितवेत्ता था। लेकिन उसके पास जो गणित का ज्ञान था, उससे ज्यादा ज्ञान आज कालेज के बच्चों को होता है। न्यूटन आज अगर आ जाय और कालेज के क्लास में बैठे तो वहाँ विद्यार्थी के तौर पर ही वह बैठ सकेगा, प्रोफेसर के नाते नहीं। मतलब उस जमाने का बहुत बड़ा गणितवेत्ता जो था उसका भी ज्ञान आज छोटा पड़ गया है।

सोचने की बात है कि जमाना आगे बढ़ता आ रहा है और विज्ञान इतने जोरों से आगे बढ़ रहा है कि दो साल पहले की विज्ञान की किताब आज पुरानी हो जाती है, इतना जल्दी ज्ञान बढ़ रहा है। और, हमारा दिल कितना बढ़ा है? बिलकुल छोटा। हम कौन हैं? ब्राह्मण हैं, भूमिहार हैं, शिव के उपासक हैं। केवल ख्रिस्ती नहीं तो रोमन कैथोलिक हैं, लूथर्न ख्रिस्ती हैं, ऐंग्लिकन ख्रिस्ती हैं, प्रोटेस्टेन्ट हैं। तो ख्रिश्चनों में भी सेक्शन्स पड़ गये हैं, और हम शिया हैं, हम सुन्नी हैं। इस प्रकार से मुसलमानों में भी भेद हैं। पेड़ पर कितनी पत्तियाँ हैं, जरा गिनें। पेड़ पर जितनी पत्तियाँ मिलेंगी, उतनी जातियाँ और उतने पंथ भारत में मिलेंगे। अनगिनत भेद! इतना छोटा दिल हमारा बना है। वह बड़ा दिमाग सम्भाल नहीं सकता।

यह होता कि जितना दिल छोटा उतनी ही कम अक्ल, उतना ही छोटा दिमाग तो बात अलग थी। मेरी इतनी छोटी-सी जाति और मेरी दुनिया कितनी बड़ी?—५० मील लम्बी और ५० मील चौड़ी, तो दिल और दिमाग दोनों छोटा। शेरों का ऐसा होता है। फिर झगड़े नहीं होते। शेरों को मालूम नहीं होता कि उनकी जाति के लोग कितने हैं। उनको अगर कहा जाय कि तुम्हारी जाति के लोग सरगुजा (म० प्र० का जिला) में हैं तो वे कहेंगे कि सरगुजा हमने देखा ही नहीं। उनको १०-१२ मील का ट्रैक मालूम है। और उनका 'इण्टरेस्ट' एक ही चीज में है कि दिन भर में एक शिकार मिल जाय। हिरन मिले तो अच्छा, नहीं तो कम-से-कम खरगोश तो मिल ही जाय। दूसरी बात खाने के बाद पानी चाहिए। हर जगह पानी नहीं मिलता तो कभी-कभी पानी के लिए दस-बारह मील जाना पड़ता है। उतनी ही दूर का उनका भूगोल है। उसके आगे का उनको कुछ मालूम नहीं। उनका दिमाग इतना छोटा है और दिल भी छोटा है, इसलिए उनको समाधान है। जो असमाधान आज मानव को होता है वह शेर को नहीं होता। उनको खाने-पीने को मिल जाता है और काम-वासना होगी तो उसकी भी वहाँ व्यवस्था होती है। उससे अधिक उनको कुछ नहीं चाहिए। उतने से उनका पूरा समाधान है।

दिल को बड़ा बनाना होगा

लेकिन मानव का ऐसा नहीं है। मानव का दिमाग बड़ा बन गया है और दिल छोटा, इसलिए उसको असमाधान है। अब दिमाग तो छोटा बनाना असम्भव है। विज्ञान ने यह बात अब असम्भव कर डाली है। अभी तो

मानव चाँद पर गया है। मुमकिन है वहाँ तो मिट्टी-ही-मिट्टी होगी, जीव-सृष्टि नहीं; लेकिन कल अगर मंगल पर जायेंगे तो वहाँ जीव-सृष्टि मिल सकती है, ऐसा माना गया है। संस्कृत में यह बात मानी है। संस्कृत में 'कु' याने पृथ्वी और मंगल को 'कूज' कहते हैं, याने पृथ्वी से पैदा हुआ। भौम भी कहते हैं, याने भूमिपुत्र मानते हैं। मतलब, प्राचीन ऋषि भी मानते थे कि पृथ्वी और मंगल में कुछ अंश समान है और उनका सम्बन्ध है। वैज्ञानिक भी मानते हैं कि शायद मंगल पर अनुकूलता होगी। तो मनुष्य चाँद पर जाय, मंगल पर जाय और हम यहाँ सिमडेगा (अनुमंडल) ही चलायें, तो यह कैसे चलेगा?

मुझे तो बचपन से एक उम्मीद है, धुन है, कल्पना है कि परमात्मा की सृष्टि अनन्त है। इस सृष्टि को निश्चित आँकड़ों में नहीं दिखा सकते। वह अनन्त है और एक जल-बिन्दु में शत्-शत् कृमियाँ होती हैं, ऐसी विशाल सृष्टि है। एक जगह सीमा आती है कि मनुष्य को पाँच इंद्रियाँ हैं। कुछ प्राणी हैं, जिनको चार इंद्रियाँ हैं। कुछ को तीन इन्द्रियाँ हैं, कुछ को दो इन्द्रियाँ हैं और कुछ तो एक ही इन्द्रिय के प्राणी हैं। वह स्पर्शेन्द्रिय होता है। वह छुयेगा तभी पता चलेगा। ऐसे बारिक-बारिक जंतु सृष्टि में हैं। जापान के लोग मानते हैं कि जब भूकम्प होनेवाला होता है तो वहाँ के एक विशिष्ट प्रकार के कीड़ों को स्पर्शेन्द्रिय से भूमि के अन्दर जो क्रिया होती है उसका पता लगता है और वे हलचल करने लगते हैं। उससे मालूम होता है कि भूकम्प घंटे, डेढ़ घंटे में होनेवाला है। इस प्रकार मनुष्य से भी ज्यादा ज्ञान उनको स्पर्शेन्द्रिय के कारण होता है।

लेकिन हम सोचते थे कि एकेन्द्रिय, दो इन्द्रियों, चार इन्द्रियों और पाँच इन्द्रियों के जीव, बस समाप्तम्। ईश्वर की सृष्टि में इन्द्रियों की संख्या ऐसी निश्चित कैसे हो सकती है? तो कहीं छः इन्द्रियोंवाला, सात या आठ इन्द्रियोंवाला जीव पृथ्वी में होना चाहिए। और पृथ्वी पर नहीं तो और कहीं होना चाहिए। हमको बचपन से धुन है कि किसी स्थान पर चन्द्रमा या मंगल पर ऐसे जीव होंगे, जिनको अधिक इन्द्रियाँ होंगी। मान लीजिए, वहाँ का कोई जीव यहाँ आये और आप लोग उससे कहें कि हम सुनते हैं। तो वह कहेगा कि मैं सुनता हूँ और 'टुनता' भी हूँ। हम तो केवल सुनते हैं, उसके पास टुनना भी है। उसके पास कोई छठी इन्द्रिय होगी। 'टुनना' एक स्वतंत्र इन्द्रिय हो सकती है। जैसे हम कान से सुनते हैं, उसे और एक इन्द्रिय होगी जिससे वह टुनता होगा। फिर आज जो फिजिकल साइन्स (पदार्थविज्ञान) है, वह सारा चलेगा नहीं। दूसरा फिजिकल साइन्स वहाँ पर होगा, जहाँ छः इन्द्रियाँ होंगी। इसलिए हमको बचपन से धुन है कि कहीं पाँच से अधिक इन्द्रियवाला जीव होगा और ऐसे जीवों से संपर्क होगा तो हमारे ज्ञान का विस्तार होगा।

दिमाग उत्तरोत्तर बढ़ता जायेगा

एक थी दुनिया। वहाँ आँखवाले नहीं थे, सारे लोग अन्धे थे। एक बार एक आँखवाला मनुष्य वहाँ पर पहुँचा। वहाँ उन लोगों को वह कहने लगा कि यह फूल लाल, पीला दिखता है। तो वे सारे अंधे लोग कहने लगे कि यह क्या तुम कह रहे हो? लाल-पीला-नीला क्या कह रहे हो? वे सारे घबड़ा गये कि यह क्या बोल रहा है। उससे पूछने लगे कि तुम्हें यह बात कहाँ से मालूम होती है। तो उसने उनकी उंगलियाँ पकड़कर अपनी आँख में लगायीं और कहा कि यहाँ से मालूम होता है। उन लोगों ने सोचा कि इसे जरूर कोई बीमारी हुई है। उसे पकड़कर अस्पताल ले गये। उसकी दोनों आँखों का आपरेशन करके फोड़ डाला। फिर उससे पूछा—लाल, पीला, नीला दिखता है? बोला—नहीं। बोले कि अब अच्छा हो गया। अंधों का वहाँ बहुमत था और आँखवाला अकेला था। जैसे, हमारे यहाँ बहुमत का रूल चलता है वैसे उन लोगों ने वहाँ चलाया कि इसको बीमारी हुई है तो इसकी आँखें ठीक की जायँ। उसने कहा कि अब मुझे लाल-पीला-नीला नहीं दिखता तो बोले कि अब यह पास हो गया। आँखवाले का इलाज हो गया, अंधों की दुनिया में।

मेरे प्यारे भाइयो, कुछ भी दुनिया हो सकती है चन्द्र और मंगल पर, हम जानते नहीं। लेकिन अनेक इन्द्रियवाले जीवात्मा भी हो सकते हैं और उनसे संपर्क आया तो संभव है कि हमारा ज्ञान बढ़ेगा।

यह सारा इसलिए कहा कि हमको अपना दिल बड़ा बनाना होगा, चाहे राजी हो या चाहे बेराजी। यह यहाँ कहावत है। जब भूदान शुरू हुआ तब यह नारा लगाया जाता था—राजी,बेराजी भूमि बाँटे के पड़ी—राजी हो चाहे नाराजी हो, जमीन बाँटनी होगी। वैसे अब चाहे राजी हो या बेराजी, इसके आगे हमारा दिल बड़ा बनाना होगा।

बड़ा बनाना होगा याने क्या? स्केल बढ़ाना होगा। एक स्केल होती है। भारत का नक्शा कितना लम्बा-चौड़ा होता है? दस इंच लम्बा दस इंच चौड़ा और भारत कितना लम्बा-चौड़ा है? दो हजार मील लम्बा और दो हजार मील चौड़ा। लेकिन इतने से नक्शे पर सारा भारत आ जाता है। उसमें स्केल दी जाती है कि एक इंच में दो सौ मील समझें वैसे हमें हमारा स्केल बढ़ाना होगा।

जय हिन्द नहीं, जय जगत्

हम कहते हैं कि भारत हमारा देश है। वह अब बढ़ाना होगा। अब जय हिन्द नहीं, जय जगत् कहना होगा। जय हिन्द अब पुरानी चीज हो गयी, पुरानी बात हो गयी। हमने जय जगत् का नारा दिया था। याने कुल दुनिया को एक समझना चाहिए। दुनिया के निवासी एक हैं, ऐसा विचार बनना चाहिए। तभी मानव-मानव एक होगा, अन्यथा झगड़े नहीं मिटेंगे। इस वास्ते क्या करना पड़ेगा? हमारा देश होगा जगत्, भारत होगा प्रान्त, बिहार होगा जिला और राँची होगा तहसील और गाँव क्या होगा? गाँव होगा परिवार। आज क्या है? आज पाँच मनुष्यों का परिवार होता है। उसीके लिए पुरुषार्थ करते हैं। लेकिन अब उसको बढ़ाकर सारा गाँव परिवार बनाना होगा। अगर ऐसा हम बना दें तब तो हमारा दिल बड़ा बनेगा और दिमाग तो बड़ा है ही। और अब तो हमारा 'इंटर-प्लैनेटरी' सम्बन्ध बनेगा, अन्तरखगोल-सम्बन्ध बनेगा। हमको दिल बड़ा बनाना होगा और

[शेष पृष्ठ ५४९ पर]

www.vinoba.in

नक्सालवादियों के प्रति व्यक्त जयप्रकाशजी की सहानुभूति और अहिंसावादियों की परीशानी

[यों तो जयप्रकाशजी ही नहीं, विनोबाजी ने भी बार-बार यह बात कही है कि यथास्थिति असह्य है, इसकी बजाय रक्त-क्रान्ति पसन्द की जा सकती है। इस बात को बार-बार दुहराते समय मंशा बराबर यह रहती रही है कि अहिंसक क्रान्ति के लिए और अधिक वेग और समर्पण के साथ जुटना अनिवार्य है।...लेकिन पिछले दिनों दिल्ली में गांधी-शताब्दी-समिति द्वारा आयोजित एक समारोह में जब श्री जयप्रकाश नारायण ने नक्सालपंथी लोगों के प्रति अपनी सहानुभूति जाहिर की, तो दिल्ली के पत्रकारों के कलम की नोक कुछ अधिक पैनी हो उठी, और जयप्रकाशजी की आवाज उन कानों के पर्दों से भी जा टकरायी, जिन्होंने यथास्थितिवाद को अहिंसा का पर्याय मान लिया है। शायद इसलिए कि कुछ को उनकी उक्त आवाज में सन् '४२ जैसी ललकार सुनायी पड़ी थी।

वर्तमान जड़ता को झकझोरनेवाली इस घटना पर "भूदान-यज्ञ" के पाठक गत १४ और २१ जुलाई के अंकों में दो प्रतिक्रियाएँ पढ़ चुके हैं। इस अंक में प्रस्तुत हैं कुछ और भी प्रतिक्रियाएँ। —सम्पादक]

कूच का वक्त आ गया है !

प्रजातंत्र में संवैधानिक तौर-तरीकों से, शान्तिपूर्ण रीति-नीति से समाज-व्यवस्था में आमूल परिवर्तन किया जा सकता है। पर अंग्रेजों की नौकरशाही, जो हमें विरासत में मिली है वह इस क्रान्ति को आगे नहीं बढ़ा सकी है। नक्सालवादी, साम्यवादी मित्रों के प्रति जयप्रकाशजी का उदार रुख समयानुरूप ही है, किन्तु यह उनके कोमल स्वभाव की विवशता में से निकली आवाज है। ऐसा लगता है कि दुविधा में फँसे जयप्रकाशजी नया मार्ग खोज रहे हैं, पर वह मार्ग वही हो सकता है, जो बाबा का है। पगडंडी बाबा ने बना दी है, अब युग आह्वान करता है कि जयप्रकाशजी शिविरों-सम्मेलनों का उद्घाटन करना छोड़ निकल पड़ें अपने सभी साथियों को लेकर बापू की तरह नमक-कानून तोड़ने, विनोबा की तरह भूमिहीनों और भूमिवानों से नाता जोड़ने ! तब एक ऐसी शक्ति प्रकट होगी जिसकी मिसाल मिलना कठिन है। चन्द बुद्धिजीवियों के बीच रहकर युगप्रवर्तक, लोकशक्ति का उन्नायक, हमारा यह जननायक क्रान्ति का वाहक नहीं बन पायेगा और उसकी प्रतिभा को कुंठित होना पड़ेगा

लोकशक्ति प्रकट होने को है। कई जगह हो चुकी है, पर वह हिंसक रूप में उभरी है। अहिंसक रूप में उसको उभारने का काम अपने स्वास्थ्य की परवाह न करते हुए भी जयप्रकाश बाबू करेंगे तो राजनीति से दूर रहकर निःस्वार्थ सेवा करनेवाले अनेक लोगों में नयी जान आ जायेगी। फिर हमको बार-बार राजनेताओं की ओर नहीं भागना पड़ेगा। जनशक्ति के आगे राजशक्ति तो सदैव ही नतमस्तक होती आयी है। अब समय आ गया है कि पुराने जमाने में जिस तरह राजदंड संन्यासियों के हाथ में होता था, उसी तरह राजनीति से संन्यास धारण करनेवाले जयप्रकाश लोकनीति का राजदंड उठा लें, और देश में कायम हो रही अनेक बुराइयों का कृष्ण की तरह अपनी कुशल चैतन्य बुद्धि-कौशल से नाश करें। नये समाज की रचना का महान् कार्य करने में दुविधा छोड़ अर्जुन की तरह गांडीव उठाना ही आज का स्वधर्म हो गया है। भगवान बुद्ध की तरह विनोबा की पदयात्रा ने इस देश की धरती में सत्य, प्रेम और करुणा का बीज बोया था, अब जयप्रकाशजी की बारी है कि वे निकलें फसल काटकर उसका न्यायोचित बँटवारा करने। यदि इसमें तनिक भी विषाद किया तो सारा देश गृहयुद्ध के चंगुल में फँसकर दूसरा विएतनाम, कम्बोडिया, लाओस और कोरिया की शक्ल धारण कर लेगा। करुण रस की धारा के स्थान पर यहाँ खून की धारा बहेगी। शस्य श्यामला भारतमाता रक्तललाम हो जायेगी।

जनता प्रतीक्षा कर रही है जयप्रकाश के रूप में राम की, जो पूँजीवाद के रावण से उसे छुड़ा दे। कई हनुमान स्वार्थों की लंका में अपनी त्याग-तपस्या के तेज से आग लगाने को तैयार बैठे हैं। निहित स्वार्थवालों से पीड़ित कई विभीषण हमारे साथ हो जायेंगे। फिर हर जगह ग्रामदान-नगरदान की गंगा फूट पड़ेगी। कल-कारखाने, मकान का ट्रस्टीकरण हो जायेगा। शोषण पर आधारित समाज-व्यवस्था लड़खड़ाकर गिर जायेगी।

एक बार हम सभी कार्यकर्ता जयप्रकाश को आह्वान करें और अगले सर्वोदय-सम्मेलन से ही हम सब उनके साथ अनन्त की लम्बी यात्रा पर कूच करने को निकल पड़ें, तभी तो सर्वोदय होगा, अन्यथा देश के पहले ही हमारा सर्वनाश निश्चित है !

—जगन्नाथ सेठिया, इन्दौर

अहिंसा कब्रिस्तान की शान्ति नहीं, सामाजिक क्रान्ति की महाशक्ति

श्री जयप्रकाश नारायण के हाल के वक्तव्यों और विशेषकर उनके गांधी-जन्म-शताब्दी की एक समिति के उत्सव में दिये गये भाषण पर पूँजीवादी क्षेत्रों में जो होहल्ला मचा, वह तो समझ में आता है, किन्तु जब अहिंसा और सर्वोदय में विश्वास रखनेवाले भी उसी सुर में बोलने लगते हैं तो ऐसा मालूम होता है कि श्री हरिभाऊ उपाध्याय जैसे कर्मठ गांधीवादी भी नक्सालवादियों की हिंसा के बारे में तो बहुत अधिक चिन्तित हैं, किन्तु पूँजीवाद व सामन्तवाद की व्यापक हिंसा और अन्याय के प्रति उनमें ऐसी तीव्र भावना नहीं है, न ही उस हिंसा को पोषण करनेवाली सरकार के प्रति विरोध की भावना है, न उसको दूर करने की क्रान्ति के लिए उद्यत कर देनेवाली बेचैनी ही है, इसीलिए वे जयप्रकाश बाबू की पूरी बात

समझे बगैर ही उन पर टीका-टिप्पणी करना व उनकी अहिंसा के प्रति आस्था को चुनौती देना आवश्यक समझते हैं। क्या श्री हरिभाऊ उपाध्याय को भी यह याद दिलाना पड़ेगा कि जब हिटलर ने पोलैंड पर आक्रमण किया तो गांधीजी ने पोलिश लोगों की सशस्त्र रक्षात्मक लड़ाई की भर्त्सना नहीं की, बल्कि उसे उचित ही बताया। यह बात अहिंसा के उसूल के अनुकूल है, इसके लिए इसे गांधीजी के द्वारा कही हुई होना आवश्यक नहीं है। वास्तव में यदि बहुत बड़ी हिंसा और आततायीपन का मुकाबला अहिंसा से करने की किसीमें क्षमता नहीं है या उसका अहिंसा में इतना विश्वास नहीं है तो उसे बर्दाश्त करने से लाख गुना अच्छा है कि वह हिंसा से उसका मुकाबला करे। मुकाबला न करके कायरतापूर्ण तरीके से उसे बर्दाश्त करना उससे बहुत अधिक व गंभीर हिंसा होगी।

यह तो सही है कि इस व्यापक हिंसा को जड़ से दूर करने के लिए अहिंसक तरीका ही सर्वोत्तम और अधिक कारगर तरीका है और श्री जयप्रकाश नारायण ने यह बात साफ तरीके से बतायी है। (लेकिन श्री हरिभाऊ भाई जैसे लोगों ने उसे नजरअन्दाज कर दिया।) यदि जयप्रकाशजी अहिंसा में विश्वास न करते तो उन्हें यह कहने में कोई हिचक न होती कि अहिंसा निरर्थक है, लेकिन अहिंसा में उनका विश्वास होते हुए भी, उनसे यह आशा तो नहीं की जानी चाहिए कि जिन्होंने अत्यधिक व्यग्रतावश अथवा अहिंसक तरीके को कारगर न समझते हुए हिंसक तरीका अपना लिया है, उनकी वे इस समय भर्त्सना करके लोगों की सामाजिक अन्याय के विरुद्ध उठती हुई भावनाओं को कुचलने में मदद दें। हमने समाजवाद की ओर कदम रखनेवाले समाज के लिए एक सूबे में लगभग पूर्ण रूप से और बाकी सूबों में आंशिक रूप से केवल लोक-सम्मति प्राप्त की है, जिसमें समाजवादी अथवा सर्वोदय समाज की स्थापना की सम्भावनाएँ तो हैं, किन्तु जिसको विधानवाद व सुधारवाद के नाग डसने और जिसमें राजा रामगढ़-सरीखे लोग बहुमत प्राप्त करके जनचेतना को निष्प्राण बना देने को तैयार बैठे हैं। इसको रोकने के लिए इन नागों से बचकर हमें अहिंसक सीधी कार्यवाही के द्वारा सामन्तवादी व पूँजीवादी हितों को कमजोर बनाना है।

हमें नक्सालवादियों की भर्त्सना करने का मौका केवल तब होगा जब अहिंसा सर्वव्यापी हो जायेगी। अहिंसा द्वारा सब समस्याएँ सुलझ रही होंगी और ये लोग उन समस्याओं के सुलझाने में बाधक हो रहे होंगे।

आज यह स्थिति नहीं है। आज तो हिंसा की नींव पर टिका हुआ और व्यापक हिंसा को पोषित करनेवाला पूँजीवाद व सामन्तवाद न केवल मौजूद है, बल्कि जहाँ तक पूँजीवाद का ताल्लुक है, वह तो कांग्रेस व उसकी सरकार व अन्य तत्त्वों की कृपा से खूब फल-फूल रहा है। ऐसी स्थिति में अहिंसा के नाम पर, इस व्यवस्था पर चोट करनेवालों की भर्त्सना नहीं की जानी चाहिए, बल्कि उन्हें यह बताकर साथी बनाया जाय कि उनका पवित्र ध्येय अहिंसक उपायों द्वारा ज्यादा कारगर तरीके से प्राप्त हो सकता है। जब गांधीजी बहुत-से आतंकवादियों व अन्य हिंसक उपायों में आस्था रखनेवाले लोगों को अपने मार्ग में अग्रसर करने में सफल हो गये, तो यह क्यों असम्भव समझा जाय कि ये लोग भी अहिंसक उपायों से सर्वोदय (अथवा साम्यवादी) समाज को लानेवाले सिपाही नहीं बन सकेंगे?

ऐसे लोगों के प्रति प्रतिस्पर्धा का रूप अपनाकर अपने अहिंसक तरीके को उत्तम साबित करने की बजाय यदि हमने उनकी भर्त्सना करना शुरू कर दिया तो हम यथास्थिति, जो व्यापक हिंसा की जन्मदात्री है, को ही पोषण देने में लगेंगे।

जाहिर है कि अहिंसा कत्र की निस्तब्धता नहीं है, बल्कि न्याय को लाने का एक उपाय है। श्री जयप्रकाश नारायण को प्राणों की बाजी लगाने को कहा गया है। सम्भवतः उन्हें इसमें कोई गुरेज भी नहीं होगा। वे कई बार कह चुके हैं कि बिहार में झोपड़ियों की जमीन के अधिकार को भी कांग्रेस या संविद-सरकारें बड़े-बड़े भूपतियों के दबाव में आकर नहीं दे पायीं, ऐसी दशा में ग्रामदान हुए। बिहार में यदि जयप्रकाशजी जनता की अहिंसक सीधी कार्यवाही के द्वारा उन अधिकारों को न दिलवा पाये तो न केवल सर्वोदय और अहिंसा की बदनामी ही होगी, वरन् सामन्तवाद की जड़ जमी रहेगी और वे ग्रामदानी गाँवों की ग्राम-सभाओं पर प्रभावकारी ढंग से असर डालकर उन्हें किसी भी क्रान्तिकारी कदम से अलग रखेंगे।

अतः श्री जयप्रकाशजी अवश्य ही किसी अहिंसक सीधी कार्यवाही की बात सोच रहे होंगे, ऐसा हमें विश्वास है। किन्तु ऐसी किसी भी कार्यवाही में श्री उपाध्याय-सरीखों के वर्तमान विचार बाधक हो सकते हैं, क्योंकि ऐसी कार्यवाही करने के लिए पूँजीवाद, सामन्तवाद पर सीधी चोट करनी होगी। और जो भी तत्त्व सामाजिक न्याय में आस्था रखते हैं, जिनमें नक्सालवादियों को भी शामिल किया जा सकता है, उन्हें सहानुभूतिपूर्वक अपने अहिंसक सत्याग्रह आदि की क्षमता व उत्तमता समझानी होगी।

ऐसी किसी भी कार्यवाही में कांग्रेसी अथवा अन्य सरकार से टक्कर होगी, जो सम्भवतः श्री उपाध्याय-सरीखे लोगों को अभीष्ट न हो। इसलिए हम अनुरोधपूर्वक श्री उपाध्याय व उनकी तरह सोचनेवाले लोगों से निवेदन करना चाहते हैं कि वे अहिंसा को संकुचित अर्थ में अपनाकर श्री जयप्रकाश नारायण की आलोचना करने के बजाय अहिंसा को व्यापक अर्थ में अपनायें और पूँजीवाद, सामन्तवाद उनको पोषित करनेवाली कांग्रेस-सरकार की हिंसक शक्ल जनता के सामने रखकर उन तत्त्वों की भर्त्सना करें और ऐसी व्यवस्था पर चोट करनेवालों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण रुख अपनायें।

—जीवाराम, मुरादाबाद

नक्सालवाद की उत्पत्ति शराब की बोतल में से नहीं, शोषित और उत्पीड़ित लोगों की आह में से

१४ जुलाई के अंक में "भूदान-यज्ञ" के सम्पादक ने श्री हरिभाऊ उपाध्यायजी का वह पत्र, जिसमें उन्होंने श्री जयप्रकाशजी के दिल्ली में गांधी-जन्म-शताब्दी उत्सव में व्यक्त विचार पर अपने हृदय का दुःख प्रकट किया है, प्रकाशित करके एक नेक कार्य

किया है। श्री उपाध्यायजी गांधीजी के साथ के लोगों में से हैं और गांधीजी के रचनात्मक कार्यों में सतत लगे रहे हैं तो यह उनके मानस के अनुरूप ही है कि उन्हें अहिंसा से अनुराग हो। अनुराग के कारण ही वे श्री जयप्रकाशजी के विचार पर दुःखाभिभूत हो उठे हैं। श्री उपाध्यायजी की मंशा पर शक नहीं किया जा सकता। उन्होंने अपना दुःख जिस भाषा में व्यक्त किया है, उससे ऐसा ही प्रतीत होता है कि वे अपने भावावेश को रोक नहीं सके हैं और विचार के स्तर को छोड़कर उन्होंने व्यक्ति के स्तर पर विचार करने की कोशिश की है। मैं ऐसा महसूस करता हूँ कि श्री उपाध्यायजी ने इस विषय को भावना के स्तर से ऊपर बुद्धि के स्तर पर नहीं जाने दिया है।

श्री जयप्रकाशजी ने नक्सालवादियों के लिए जितनी भी अपनी सहानुभूति प्रकट की हो, लेकिन इस बात की ओर उन्होंने स्पष्ट संकेत किया है कि हिंसा से उस लक्ष्य की प्राप्ति कदापि नहीं हो पाती, जिसकी कल्पना क्रांतिकारियों के दिमाग में रही होती है। और यह भी उन्होंने कहा है कि अगर हिंसा से क्रान्ति की संभावना होती तो वे हिंसा के मार्ग को चुनने में संकोच नहीं करते। वह नक्सालवादियों के लिए जब सहानुभूति प्रकट करते हैं तो यही न कहते हैं कि अगर नक्सालवादी पद्धति से भूखे को रोटी मिल जाती है तो उनके लिए सहानुभूति के सिवाय दूसरा भाव क्या प्रकट किया जा सकता है! एक ओर करोड़ों-करोड़ लोग भूख की ज्वाला में जलते रहें और उसके बुझने का निकट भविष्य में कोई आसार न देखते हों तो वे क्या करें? वे तो यही न चाहेंगे कि उन्हें रोटी मिले? उस समय वे हिंसा-अहिंसा का विचार करने बैठेंगे? अगर हमें अहिंसा की बहुत ज्यादा चिन्ता है तो हमारा काम है कि हिंसा के कारण दूर हों और अहिंसा सामाजिक शक्ति (सोशल फोर्स) बनकर सामने आये। समाज के अन्याय शीघ्रातिशीघ्र दूर हों। मानवीय सम्बन्धों का नया विहान क्षितिज पर दिखाई दे। इसीलिए विनोबाजी बार-बार कहते हैं कि यह 'करो या मरो' का समय उपस्थित है, कल के लिए कुछ बचनेवाला नहीं है, जो करना है आज करना है। लेकिन उनकी यह नेक सलाह लोगों के कान तक नहीं पहुँचती है या अगर पहुँचती है तो दिमाग में नहीं अँटती; और जब नक्सालवादी छोटे-मोटे उपद्रव होते हैं तो अहिंसक पुजारी के कान खड़े हो जाते हैं। वह चिन्तित हो उठता है। उसके दिल से एक 'आह' निकलती है और शब्दों में दुःख के साथ प्रकट होती है—'गांधी के देश में यह हिंसा'! सवाल आज यह नहीं है कि गांधी के देश में हिंसा हो रही है—ईसा के देश में हिंसा हुई है, बुद्ध, महावीर और गांधी के देश में भी हिंसा होगी, इसलिए जरूरी है कि भूखों को भरपेट भोजन मिले, तन ढकने के लिए वस्त्र मिले और उन्हें मिले इज्जत की जिन्दगी। जातिगत अन्याय समाप्त हो, और शीघ्र समाप्त हो। अन्यथा अहिंसा के जप से हिंसा को नहीं रोका जा सकता। यह अलग बात है कि हिंसा से समाज-परिवर्तन होता है या नहीं।

विनोबाजी 'करो या मरो' की मनोभूमिका में अहिंसक समाज-परिवर्तन के काम में वर्षों से लगे हुए हैं, श्री जयप्रकाशजी-जैसा समर्थ नेता पूरी तन्मयता और निष्ठा से इसमें जुटा हुआ है, दोनों आह्वान पर आह्वान करते चले जा रहे हैं; लेकिन हम हैं कि हमारे कान बहरे हो गये हैं, आँखें बन्द हैं! श्री उपाध्यायजी जैसे गांधीवादी को चौकन्ने होने के लिए क्या नक्सालवादियों का उपद्रव, एक नहीं अनेक, आवश्यक हैं? क्या उन्हें ग्रामदान में अहिंसा की शक्ति नहीं दिखती? अहिंसक समाज-रचना की संभावना अगर ग्रामदान-आन्दोलन में नहीं दिखाई देती तो दूसरा कौनसा अहिंसक प्रयोग देश में हो रहा है, जिससे यह माना जाय कि सामाजिक अन्यायों, अनीतियों से यह देश बचाया जा सकेगा? गांधी की अहिंसा तो प्रयोग की अहिंसा थी!

श्री उपाध्यायजी ने राजस्थान के नशाबन्दी-सत्याग्रह का उल्लेख किया है, परन्तु नक्सालवादी 'नशा' की उपज नहीं हैं। वे हैं भूख और अन्याय की उपज। इसलिए पूर्ण नशाबन्दी भी नक्सालवाद का जवाब नहीं होगा। उसका एकमात्र जवाब है ग्रामदान-आन्दोलन। इसीलिए विनोबाजी और श्री जयप्रकाशजी संकल्पित हैं, ग्रामदान-आन्दोलन के लिए। आज श्री जयप्रकाशजी को कष्ट-सहन और 'करो या मरो' के आह्वान के बजाय उनके प्रस्तुत आह्वान पर उनके पीछे स्वयं कष्ट-सहन की तैयारी के साथ लग जाने की आवश्यकता है। —कृष्ण कुमार, वाराणसी

मन की खीझ

"भूदान-यज्ञ" के २१ जुलाई के अंक में श्री अनिकेत के पत्र में जो विचार प्रस्तुत किये गये हैं, वे उनके अन्तरमन की वेदना हैं। पत्र लिखनेवाले ने श्री हरिभाऊ उपाध्याय के पत्र को जिस रूप में अंगीकार किया है, उसमें उपाध्यायजी के तथ्यों पर विचारणीय विचार प्रस्तुत करने की अपेक्षा अपने मन की खीझ उतारने में अधिक लाइनें भरी हैं। श्री उपाध्यायजी को प्रतीक बनाकर कांग्रेस तथा अन्य गांधी-समर्थकों को आड़े हाथ लिया है। क्या इसके लिए श्री हरिभाऊ उपाध्याय ही उनको मिले? अपने को छोड़कर सम्पूर्ण गांधी-समर्थकों को 'करोड़ों-करोड़ जनता का रक्त अधिकतर किसी खूबसूरत पर्दे की ओट से चूस लेनेवाली दर्दनाक और भयंकर हिंसा को प्रश्रय' देनेवाला मान बैठे। अनिकेतजी को श्री उपाध्यायजी के विचार तथा भाषा, दोनों पर आपत्ति है। परन्तु अनिकेतजी ने जो भाषा अपनायी है वह श्री उपाध्यायजी की भाषा से कहीं अधिक कटु तथा व्यक्तिगत कटाक्षपूर्ण है! —अवध प्रसाद, जयपुर

बापू के चरणों में

लेखक : विनोबा

गांधीजी के जाने के बाद उनकी जयन्ती और पुण्य-दिवस के प्रसंगों पर विनोबाजी ने अपनी पदयात्रा के दौरान गांधीजी के बारे में अनेक प्रवचन किये हैं। इस संकलन में विनोबाजी ने तीन विशेषताओं पर विशद प्रकाश डाला : १. साधन-साध्य की एकता, २. अहिंसा के सार्वजनिक प्रयोग, और ३. सामूहिक साधना। इस युग को गांधीजी की ये देनें विनोबाजी की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। इस पुस्तक का ५१ हजार का दूसरा संस्करण प्रकाशित हो रहा है।

पृष्ठ : १०४ मूल्य : रु० १-२५

सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी

'गाँव-गाँव में तुम्हारा पर्चा कब पहुँचेगा ?'

www.vinoba.in

—बिहारदान के बाद का सवाल और बाबा की एक ही 'रट'—

"राही···राह चलनेवाला या राह खोजनेवाला ?"—अपनी दिमागी और व्यावहारिक स्पष्टता के लिए (और निःसंदेह 'भूदान-यज्ञ' के पाठकों तथा कार्यकर्ता साथियों के लिए भी) पूछे गये मेरे लिखित सवालों को लेटे-लेटे पढ़ने के बाद बाबा ने पूछा। मैं इस प्रश्नोत्तर के लिए तैयार नहीं था, फिर भी अनायास कहा गया, "खोजनेवाला।"

"अच्छी बात !" बाबा के चिरपरिचित शब्द सुनायी दिये, जो शायद उनकी अभिव्यक्ति-शैली के 'टेक' बन गये हैं।

थोड़ी देर तक निस्तब्धता-सी रही। हम बाबा की ओर केन्द्रित रहे और शायद बाबा अपने आप में। फिर पालथी लगाकर इत्मीनान से बैठ गये और दोनों हाथों से नीचे की ओर शून्य में ही अलग-अलग वृत्त-से बनाने लगे, फिर 'नकार' का भाव प्रदर्शित किया और आखिर में ऊपर की ओर ताककर दोनों हाथों से मानो आकाश से कुछ व्यापक परिमाण में गिरने का संकेत करने लगे। हम कुछ-कुछ समझने का प्रयास करते हुए विस्मित-से एकटक उधर ताकते रहे।

"कुछ समझ में आया ?"—मानोबाबा ने सबक सिखाकर परीक्षा लेनी चाही।

"नहीं बाबा !" हमने बेहिचक अपनी असफलता स्वीकार कर ली।

आखिर उन संकेतों को शब्दाकार करना पड़ा। बाबा बोले, "हजारों-लाखों किसान काम में लग जायेंगे, जब बारिश होगी। अगर यह कोशिश करो कि यहाँ कुआँ खोदें, वहाँ कुआँ खोद तो यह कब होगा ? सारे बिहार में कब तक होगा और सारे भारत में कब तक होगा ? तब फिर कब पानी मिलेगा ? ऐसे काम मानव-शक्ति से नहीं होते, ईश्वर की शक्ति से होते हैं। मामूली समय में पक्षी आकाश में उड़ते हैं। लेकिन तूफान में पत्तियाँ भी उड़ती हैं। ग्रामदान शब्द चल पड़ा है। पहले तो बेचारा मामूली भूदान था। फिर ग्रामदान उसमें से निकला और अब प्रखंडदान, जिलादान, फिर प्रान्तदान !

"···किसानों ने सारी जमीन बराबर कर ली, हल जोतकर तैयार कर लिया और ऊपर से बारिश नहीं हुई तो मामला खतम हो गया ! लेकिन वे तैयारी करते हैं। हल चलायेंगे, इस आशा में कि ऊपर से पानी बरसेगा।"

मेरा प्रश्न बिहारदान के बाद के अपेक्षित कार्यक्रम और उसकी संचालक शक्ति विकसित करने से सम्बन्धित था। मन को इस जवाब से कुछ निराशा-सी हो रही थी, कि तभी उन्होंने पहले बिहारदान को पूर्णता की मंजिल तक पहुँचने की महत्ता स्पष्ट की, "जहाँ यह शब्द चलेगा वहाँ या तो उसकी कीमत—'जीरो', सारा पोल, होता-जाता कुछ नहीं, या तो एकदम पूर्ण ! शून्य दिखाने के लिए पूरी सर्किल (परिधि) दिखाते हैं। शून्य भी पूर्ण होता है, और पूर्ण के लिए भी शून्य ही है। अगर ईश्वर की इच्छा हो कि यह सारा हो जाय तो वैसा होगा।"

मेरा मन निराशा के दूसरे दौर से गुजरते हुए बाबा की अभिव्यक्तियों को समझने की चेष्टा करने लगा। लेकिन पूरी स्पष्टता तब हुई जब बाबा ने कहा, "पोलिटिकल पार्टीज (राजनीतिक दलों) के लिए तो कोई आशा नहीं रही, और प्रान्तदान से कुछ नहीं निकलता, तो फिर कतल की रात···जैसे भागवत में है कि यादव लोग आपस-आपस में मार-काट करने लगे थे; ऐसा गाँव-गाँव में होने लगेगा। अगर ईश्वर की इच्छा होगी कि संहार करना है, तो हमारे सभी प्रयत्न निष्फल जायेंगे। अगर उसकी इच्छा हो गयी कि काम सफल करना है तो एकदम जनता को जगायेगा। यहाँ सारी पार्टियाँ फेल हो गयीं तो जयप्रकाश चिल्ला रहे हैं कि राजनीति से कुछ नहीं होगा, लोक-शक्ति पैदा करनी होगी। यदि यह बात समझ में आ जाय तो लोग अपनी शक्ति बढ़ायेंगे। लोगों की शक्ति हिंसा से या अहिंसा से खड़ी करनी है, इस पर विचार होगा तो लोगों को ध्यान में आयेगा कि हिंसा से शक्ति नहीं बनती। उससे चन्द लोगों के हाथ में शक्ति आयेगी। उनका राज होगा।"

मेरे प्रश्न का एक हिस्सा यह था कि बिहारदान के बाद अपेक्षित लोकशक्ति खड़ी करने की शक्ति कहाँ है ? इस पर बाबा ने कहा, "अब सारा हमसे होगा कि नहीं होगा ? और हमसे यानी कौन ? बाबा तो कल रात है या नहीं कौन जाने ! अभी हमने पढ़ा मैथ्यू आर्नल्ड का—वह वर्ड्सवर्थ के बड़े भक्त थे। उन्होंने वर्ड्सवर्थ की कविताओं का सेलेक्शन किया है। वह इंग्लैण्ड के अच्छे कवि माने जाते हैं।···वह बहुत वर्षों बाद अपनी कन्या से मिलने के लिए गया और सामने से कन्या आ रही है ऐसा देखा तो चिल्ला पड़ा, सामने एक बाड़ थी. उस पर एकदम कूदा, और जहाँ गिरा वहीं मरा,··· समाप्तम् ! इसलिए बाबा से कुछ बनेगा, ऐसा नहीं। अभी जो बना वह बाबा से नहीं बना। तो जिस 'शक्ति' से इतना बना, वही आगे बनायेगी।"

बाबा हमारी आकांक्षाओं और क्षमताओं से भली प्रकार परिचित हैं। बाबा की कही हुई बातों में से अपने और अपने साथियों के पुरुषार्थ के लिए कोई क्षेत्र, किसी काम का संकेत मैं खोज लेना चाहता था। चाहता था कि कम-से-कम 'बिहारदान के बाद क्या ?' के जवाब में बाबा द्वारा समर्थित कोई कार्यक्रम, कोई कल्पना पेश करने के लिए मिल जाय ! लेकिन बाबा ने हमारी मंशा को समझते हुए अपनी पुरानी रट दुहरायी, जिसे सुनकर भी, उनके बारम्बार के आह्वान, अपील और एक हद तक आग्रह के बाद भी, अबतक कुछ किया नहीं जा सका है।

"तुम लोग एक बात करो। हमने बहुत दफा कह रखा है कि तुम्हारा जो पर्चा है उसे गाँव-गाँव में पहुँचाओ।···तुम्हारे पास 'एजेंसीज' हैं, तो पैसे का होना जरूरी नहीं। खादी-कार्यकर्ता जगह-जगह काम कर रहे हैं। बहुत बड़ी जमात है। कम-से-कम एक लाख गाँव में पर्चा जाय। फिर एक लाख को पाँच लाख कैसे करना, आगे देखा जायेगा। लेकिन उधर अभी लोगों का ध्यान नहीं गया है।"

बाबा को यह बात निश्चित ही मन को कुरेदनेवाली थी, कचोट पैदा करनेवाली थी। बाबा चाहते हैं कि ग्रामदान के बाद→

सर्वोदय साहित्य भण्डार, इन्दौर

www.vinoba.in

साहित्य-सेवा के आठ वर्ष

जुलाई सन् १९६१ में इन्दौर नगर में सर्वोदय साहित्य भण्डार की स्थापना हुई थी। विसर्जन आश्रम द्वारा संचालित और सर्वोदय साहित्य-प्रचार समिति के संयोजक श्री जसवन्तराय द्वारा संगठित इस सर्वोदय-साहित्य भण्डार ने अपने जीवन के आठ वर्षों में सर्वोदय साहित्य प्रसार और प्रचार का अनुकरणीय काम किया है। और, अब तो यह भण्डार केवल पुस्तक-बिक्री-केन्द्र के रूप में नहीं, सर्वोदय-विचार-शिक्षण और प्रचार-केन्द्र के रूप में विकसित हो गया है। इसके जीवन-विकास में सर्वश्री जसवन्तरायजी की सातत्यपूर्ण विचार-निष्ठा, दादाभाई नाईक, काशिनाथ त्रिवेदी, वि० स० खोड़े आदि मध्यप्रदेश के बुजुर्ग सर्वोदय-सेवकों का स्नेह-पूर्ण मार्गदर्शन, निर्मला देशपाण्डे, नरेन्द्र दूबे, महेन्द्रकुमार-जैसे-तरुण साथियों का सक्रिय सहयोग और स्थानीय सर्वोदय-प्रेमी महानुभावों का संरक्षण बराबर पोषण देता रहा है, देता जा रहा है।

इस समय भण्डार का एक उपकेन्द्र इन्दौर रेलवे-स्टेशन पर भी चल रहा है। भवन-निर्माण, फरनीचर, सामान और रेलवे-स्टाल के रूप में अब भण्डार के पास २३,३९४ रुपये की अपनी स्थायी पूँजी है। भण्डार की ओर से शुरू की गयी स्थायी सदस्य-योजना के १४६ सदस्य हैं। इस योजना के अन्तर्गत : (१) स्थायी सदस्य को मात्र १०१ रुपये जमा करने होते हैं, जो भंडार में अमानत रूप में जमा रहेंगे। (२) स्थायी सदस्यगण यह रकम पुस्तकों के रूप में जब चाहें एक माह बाद वापस ले सकते हैं। (३) नगदी रूप में यह रकम एक वर्ष बाद एक माह की पूर्वसूचना देकर कमी भी वापस ली जा सकती है। (४) स्थायी सदस्यों को उनकी इच्छानुसार 'भंडार' की ओर से ६ रु० वार्षिक की डायरी एवं पुस्तकें अथवा पूरे वर्ष के लिए कोई उपयोगी पत्रिका भेंट-स्वरूप दी जाती है। (५) सदस्यों द्वारा 'भंडार' से क्रय किये जानेवाले प्रायः सभी साहित्य पर १० प्रतिशत विशेष कमीशन दिया जाता है। इन्दौर नगर में ४ स्थानों पर 'शो केस' बनाये गये हैं, जिनमें सर्वोदय-साहित्य प्रदर्शित है।

साहित्य की वार्षिक बिक्री का तुलनात्मक अध्ययन रुपयों में :

	भंडार	रेलवे-स्टेशन	कुल
१९६१-६२	१६,२४१	——	१६,२४१
१९६२-६३	३४,१९३	——	३४,१९३
१९६३-६४	३०,८७७	३०३	३१,१८०
१९६४-६५	३४,९५८	१४,६१०	४९,५६८
१९६५-६६	५०,१७५	८,७७७	५८,९५२
१९६६-६७	५९,१७९	१०,०१८	६९,१९७
१९६७-६८	५०,८४९	१३,५०७	६४,३५६
१९६८-६९	१,५९,८४७	९,१७१	१,७३,०१८

सम्मेलन, मिल, प्रदर्शनी, पदयात्रा तथा शिविर में ५१,८७६

आज तक कुल योग– ५,४८,५८१

(कुल ७ वर्ष, ९ माह में)

इसमें ६० प्रतिशत सर्वोदय-साहित्य, २० प्रतिशत अन्य आध्यात्मिक साहित्य तथा २० प्रतिशत विविध साहित्य की बिक्री हुई है।

भंडार से प्रेरित होकर इन्दौर के विभिन्न विद्यालयों ने कुछ पुस्तकें अपने पाठ्यक्रम में भी शामिल की हैं, जिनके नाम हैं : (१) हम सब एक पिता के बालक (२) सौ सवाल, एक जवाब (३) भारत एक है

→एक ही काम सर्व सेवा संघ, खादी-संस्थाएँ, सर्वोदय-सेवक मिलकर करें, कि जिन गाँवों का ग्रामदान हो चुका है, उनमें अपनी पत्रिका पहुँचायें, लेकिन वह नहीं हो पा रहा है! विचार की शक्ति से चलनेवाले आन्दोलन के विचार-पत्र को, क्रान्ति की शक्ति का केन्द्र जिन गाँवों को हम बनाना चाहते हैं, उन गाँवों तक भी पहुँचाना सम्भव नहीं हो रहा है, कब होगा?

प्रश्न तो मैंने और भी कई बाबा को लिखकर दिये थे, लेकिन बाबा का यह प्रश्न ही सारे प्रश्नों का उत्तर बन गया। चलते-चलते बाबा ने पूछा, "राही को राह मिली?"

"राह तो नहीं, राह खोजने में मदद बहुत मिली बाबा!" मैंने भारी मन से विदा ली, और सोचने लगा कि बाबा का यह प्रश्न हल कैसे होगा?···कैसे होगा?

—रामचन्द्र राही

सर्वोदय साहित्य भंडार में विचार-विमर्श

(४) आश्रम-भजनावली (५) गांधी-शिक्षा, भाग : १,२,३ (६) नयी तालीम (७) घरेलू कताई की आम बातें (८) रामतीर्थ संदेश (९) मूल उद्योग कातना।

भंडार के प्रयास, प्रेरणा और प्रभाव से हुई कुछ खास बातें : (१) इस वर्ष मध्यप्रदेश शिक्षा-विभाग द्वारा लगभग ५०,००० रु० के गांधी-साहित्य का आदेश दिया गया। (२) श्री जाल चैरिटी ट्रस्ट के द्वारा इन्दौर तथा महू की समस्त शिक्षण-संस्थाओं के लिए गांधी-साहित्य का एक-एक सेट भंडार के मार्फत दिलवाया गया, जिसकी कीमत १५,००० रु० है। राजकुमार मिल की ओर से दीपावली के अवसर पर गत वर्ष समस्त सम्बन्धित विशिष्ट २५० व्यक्तियों को हर साल की तरह क्राकरी आदि भेंट में न देकर ३० रु० का 'गांधी-संस्मरण और विचार' भेंट में दिया गया। (४) वेतन मिलने के बाद कुछ लोग नियमित १०-१५ रु० का साहित्य खरीदते हैं। विवाह-शादियों में, पुरस्कारों में साहित्य भेंट में देने की प्रथा बन रही है। (५) भंडार की फुटकर बिक्री में इस वर्ष अपेक्षाकृत काफी वृद्धि हुई है। (६) पिछले वर्षों के चालू खर्च में गत वर्ष तक कुल ५,५०० रु० घाटा शेष रहा था, जिसकी सम्पूर्ण पूर्ति इस वर्ष हुई है। (७) भंडार के आगामी फरनीचर-निर्माण हेतु श्री गोविन्दराम सेक्सेरिया चैरिटी ट्रस्ट की सौजन्यता से ३,००० रु० अनुदान-स्वरूप प्राप्त हो चुके हैं। स्मरणीय है कि भंडार का पूरा फरनीचर इस ट्रस्ट से ही अनुदान-रूप में प्राप्त हुआ है, जिसकी कीमत ७५०० रु० होगी।

—जसवन्तराय

'विनोबा-चिन्तन' (मासिक)

'विनोबा-चिन्तन' प्रति मास प्रकाशित होता है। इसमें लगभग ५० पृष्ठों में किसी एक विषय पर विनोबाजी के समय-समय पर दिये प्रवचन कलात्मक ढंग से संजोये जाते हैं, जो अपने-अपने विषय में एक एक पुस्तक बन जाती है। इसके स्थायी ग्राहक बनकर इस ज्ञानराशि का संग्रह करना प्रत्येक जिज्ञासु एवं अभ्यासु के लिए लाभप्रद है।

वार्षिक मूल्य : ६ रु०, एक प्रति : ६० पैसे।

एक हजार पृष्ठों का साहित्य पाँच रुपये में

प्रत्येक हिन्दीभाषी परिवार में बापू की अमर और प्रेरक वाणी पहुँचनी चाहिए। गांधी-वाणी या गांधी-विचार में जीवन-निर्माण, समाज-निर्माण और राष्ट्र-निर्माण की वह शक्ति भरी है, जो हमारी कई पीढ़ियों को प्रेरणा देती रहेगी, नये मूल्यों की ओर अग्रसर करती रहेगी। परिवार में ऐसे साहित्य के पठन, मनन और चिन्तन से वातावरण में नयी सुगन्धि, शान्ति और भाईचारे का निर्माण होगा।

गांधी जन्म-शताब्दी के अवसर पर हम सबकी शक्ति इसमें लगनी चाहिए।

हजार पृष्ठों का आकर्षक चुना हुआ गांधी-विचार-साहित्य पाँच रुपये में हर परिवार में जाय, इसका संयुक्त प्रयास गांधी स्मारक निधि, गांधी शान्ति प्रतिष्ठान और सर्व सेवा संघ की ओर से हो रहा है। हर संस्था और व्यक्ति, जो गांधी-शताब्दी के कार्य में दिलचस्पी रखते हैं, इस सेट के अधिकाधिक प्रसार-कार्य में सहयोगी होंगे, ऐसी आशा है। इस प्रयास में केन्द्रीय तथा प्रान्तीय सरकारों का सहयोग भी अपेक्षित है।

रं० रा० दिवाकर
अध्यक्ष
गांधी स्मारक निधि, गांधी शान्ति प्रतिष्ठान

उ० न० ढेबर
अध्यक्ष, खादी ग्रामोद्योग कमीशन

विचित्र नारायण शर्मा
उपाध्यक्ष, उ० प्र० गांधी-शताब्दी समिति

एस. जगन्नाथन्
अध्यक्ष, सर्व सेवा संघ

जयप्रकाश नारायण
अध्यक्ष
अ० भा० शान्तिसेना मंडल

राधाकृष्ण बजाज
संचालक, सर्व सेवा संघ-प्रकाशन

गांधी जन्म-शताब्दी सर्वोदय-साहित्य सेट

पुस्तक	लेखक	पृष्ठ	मूल्य
१. आत्मकथा (संक्षिप्त)	: गांधीजी	२००	१·००
२. बापू-कथा (सन् १९२१-१९४८)	: हरिभाऊ उपाध्याय	२५५	२·००
३. गीता-बोध, मंगल प्रभात	: गांधीजी	१३०	१·२५
४. मेरे सपनों का भारत	: गांधीजी	१७५	१·२५
५. तीसरी शक्ति (सन् १९४८-१९६९)	: विनोबाजी	२४०	२·००
		कुल : १०००	७·५०

आवश्यक जानकारी

१. इस सेट में पाँच पुस्तकें होंगी, जिनका मूल्य ७ से ८ रु० तक होगा। यह पूरा सेट ५ रु० में मिलेगा।

२. इन सेटों की बिक्री २ अक्तूबर के पावन-दिवस से प्रारम्भ होगी।

३. चालीस सेटों का एक बंडल बनेगा। एक बंडल से कम नहीं भेजा जा सकेगा।

४. चालीस या अधिक सेट मँगाने पर प्रति सेट ५० पैसे कमीशन मिलेगा।
(सारे सेट फ्री डिलीवरी यानी निकटतम रेलवे-स्टेशन-पहुँच भेजे जायँगे।)

५. सेटों की अग्रिम बुकिंग १ जुलाई १९६९ से शुरू है। अग्रिम बुकिंग के लिए प्रति सेट २ रु० के हिसाब से अग्रिम भेजने चाहिए। शेष रकम के लिए रेलवे रसीद वी० पी० या बैंक के मार्फत भेजी जायगी।

६. सेटों की रकम तथा आर्डर निम्नलिखित पते से ही भेजें :

सर्व सेवा संघ-प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी-१

[पृष्ठ ५४२ का शेषांश]

www.vinoba.in

सारी दुनिया के साथ हमारा सम्बन्ध है, ऐसा विचार बनाना पड़ेगा।

प्राचीन ऋषियों ने संस्कृत में लिख रखा है—"वसुधैव कुटुम्बकम्"। वसुधा यानी पृथ्वी हमारा छोटा कुटुम्ब है। "कुटुम्बकम्" बोला याने जैसे बाल छोटा होता है उससे भी छोटा बालक होता है। "कुटुम्बम्" नहीं कहा। यानी यह पृथ्वी छोटा-सा परिवार है। तो हमको परिवार का विस्तार करना होगा और अब तो हमारा सम्बन्ध अन्य ग्रहों से भी हो रहा है।

जानवरों के साथ प्रेम बढ़ायें

हम आपको और आगे ले जा रहे हैं, जरा संभल कर आइएगा। पाँव फिसलने का डर है। हम आपको कह रहे हैं कि सिर्फ मानव के साथ प्रेम नहीं, बल्कि जानवरों के साथ भी प्रेम करना होगा। उन्हें भी अपनी 'फेमिली' में दाखिल करना होगा। उसके बिना नहीं चलेगा। अमेरिकन लेखक की एक छोटी-सी पुस्तक हमने पढ़ी थी। उस किताब में यह कथन है—"किल ए सरपेण्ट एण्ड लूज ए पाउण्ड"। एक साँप को मारने से एक पाउण्ड खोते हैं। अब यहाँ के मूल्य से एक पाउण्ड यानी आप २१ रु० खोते हैं। साँप क्या करता है? असंख्य कीड़ों को खाता है, जो कि आपकी खेती को नुकसान पहुँचाते हैं। इस तरह वह आपको मदद पहुँचाता है। इस वास्ते बिना कारण से मारना ठीक नहीं, खास कारण हो तो अलग बात है। उसको अपना काम करने देना चाहिए। इस तरह से हमें प्राणियों के साथ अपना प्रेम-सम्बन्ध बनाना होगा।

अभी एक बहुत बड़ी खोज उड़ीसा में हुई, जैसे कि पं० नेहरू की 'डिस्कवरी आफ इंडिया' वैसे इनकी 'डिस्कवरी आफ उड़ीसा'। उड़ीसा में चूहों के उन्मूलन के लिए अभियान चला लेकिन उनकी संख्या कम नहीं हुई तो खोज शुरू हुई और पाया कि चूहों के उन्मूलन के लिए सबसे सस्ता और आसान उपाय बिल्ली पालना है। इस तरह बिल्ली आपको चूहों से बचायेगी और साँप कीड़ों से बचाता है। गाय और बैल के तो हम पर अनेक उपकार हैं ही।

तो हमने पाया कि हमें अपना दिल बड़ा बनाना है। उसमें कुल दुनिया भर के मनुष्यों का समावेश करना होगा और यथासंभव दूसरे प्राणियों का भी समावेश करना होगा। आपने सेंट फ्रांसिस का नाम सुना होगा। उनका प्राणियों पर कितना प्रेम था! वे साँप को देखते तो कहते—'कम माई ब्रदर,' तो साँप आकर उनकी गोद में बैठ जाता। ऐसी कहानी उनकी है। इसमें झूठ मानने की जरूरत नहीं है। अपने दिल में प्रेम पैदा हो जाय तो आसपास के प्राणियों में भी उसका असर होता है। वे भी प्रेम के स्पर्श को समझते हैं। मेरा कहने का सार यह है कि अपना दिल बड़ा बनाना होगा, दिमाग तो बड़ा बन चुका है। पाँच लोगों के परिवार से नहीं चलेगा, अब इसे व्यापक करना होगा।

—सिमडेगा, राँची
२१-७-'६९

दो सप्ताह की यात्रा

बाबा की यात्रा के कारण २१ अगस्त तक राँची जिलादान की सम्भावना

विनोबाजी राँची जिले की दो सप्ताह की यात्रा करके वापस आ गये हैं। उनका पड़ाव लोहरदगा, गुमला, सिमडेगा, बसिया और खूँटी में था। पड़ावों पर सामान्य तौर पर प्रतिदिन दो से तीन बैठकें होती थीं। कोई-कोई बैठक तो ग्रामसभा का ही रूप ले लेती थी। बैठकों में सरकारी कर्मचारी, विद्यालय के शिक्षक, वकील, पादरी, आदिवासी नेता, पंचायतों के मुखिया, पंचायत-समीतियों के प्रमुख एवं अन्य समाजसेवीगण होते थे। बैठकों में प्रखण्डदान के लिए किये गये अबतक के काम का सिंहावलोकन होता था। जिन लोगों के मन में इस ग्रामदान-आन्दोलन के प्रति शंकाएँ होती थीं उनकी शंकाओं के समाधान में सुश्री निर्मला देशपांडे और श्री कृष्णराज भाई अनवरत जुटे रहते थे। बाबा का दरबार सभी के लिए खुला हुआ रहता था। जिसकी हिचक और शंका जितनी गहरी होती थी, बाबा का वर्ग उनके लिए उतना ही अधिक समय का होता था। वे उन्हें बराबर "हार्ट टु हार्ट टॉक" के लिए प्रेरित करते थे।

बाबा की यात्रा का लाभ यह हुआ कि जिन आदिवासी मित्रों के मन में यह शंका थी कि ग्रामदान-आन्दोलन उनकी जमीन पर गैर-आदिवासियों को काबिज करना चाहता है, उनका भ्रम दूर हुआ। उनके ध्यान में आया कि बाबा गिरिजनों की मुक्ति के लिए छटपटा रहा है। क्रिस्तियों को लगा कि "बाबा प्रभु का राज" स्थापित करने का प्रयास कर रहा है। आदिवासियों को लगा कि विरसा भगवान जिस काम को पूरा नहीं कर सके, अधूरा छोड़ गये हैं, बाबा उसी काम को पूरा करने का प्रयास कर रहा है। तीर-धनुष लेकर सभाओं में आनेवाले वीर-विरसा-दल तथा विरसा-सेवा-दल के नवजवानों से बाबा ने कहा कि यदि आपलोग मुझे यह समझा दें कि ग्रामदान, ग्राम-स्वराज्य आदिवासियों के हित के लिए नहीं है तो मैं इस आन्दोलन को आपके बीच से वापस ले लूंगा। लेकिन बात की तह पर पहुँचने पर वे पाते थे कि बाबा किसी निहित-स्वार्थ का प्रतिनिधि नहीं है। बाबा तो समाज के सब व्यक्तियों के उत्थान का रास्ता खोज रहा है; जिसमें सबसे अधिक पिछड़े लोगों के लिए सबसे पहले राहत की व्यवस्था है। बाबा की योजना आज की आर्थिक और सामाजिक विषमताओं को जड़-मूल से समाप्त करने की है। आदिवासी जन बाबा की बातों से प्रभावित होते और ग्रामदान के काम में जी-जान से लग जाने का संकल्प करके विदाई लेते।

सिमडेगा और खूँटी के पड़ावों पर अनुमंडलदान-प्राप्ति समितियाँ बनीं। जिन आदिवासी नेताओं ने सभा करके यह प्रस्ताव पारित किया था कि ग्रामदान-आन्दोलन का विरोध करना चाहिए, उन्होंने अपनी यह भूल स्वीकार की कि उन्होंने वैसा निर्णय

तथ्य की जानकारी के अभाव में किया था। उन्होंने सभा में घोषणा की कि उन्होंने अब स्वयं ग्रामदान-पत्र पर हस्ताक्षर कर दिये हैं। उन्होंने अपने अनुयाइयों से भी हस्ताक्षर करने की अपील की।

जो अनुमंडलदान-प्राप्ति-समितियाँ बनी हैं उनमें वे सभी स्थानीय नेता हैं, जिनका समाज पर असर है। क्षेत्र के सब तरह के कार्यकर्ता ग्रामदान का विचार समझाने और हस्ताक्षर प्राप्त करने के काम में लग गये हैं। इस काम को पूरा करने में उन्होंने खर्च का भी हिसाब लगाया और समाज के बड़े-छोटे सब लोगों से दान लेकर आन्दोलन को सफल करने का निश्चय किया।

अब रांची जिले में किसीका ग्रामदान से विरोध नहीं रह गया है। इस बात की आवश्यकता अवश्य है कि बिहार के पैमाने पर जो लोग ग्रामदान-प्राप्ति का संयोजन कर रहे हैं, वे इन अनुमण्डलदान-प्राप्ति समितियों के संपर्क में रहें और उन लोगों ने १५ से ३१ अगस्त तक की अवधि में प्रत्येक प्रखण्ड का प्रखण्डदान पूरा करने का जो संकल्प लिया है, उसकी पूर्ति में उनको सहारा देते रहें।

विनोबाजी की इस यात्रा से जो अनुकूलता बनी है वह न सिर्फ ग्रामदान-प्राप्ति में सहायक होगी; बल्कि प्रखण्डदान, जिलादान के बाद गांव-गांव में ग्रामसभा को पक्का करने, बीघा-कट्ठा जमीन का वितरण कर भूमिहीनता मिटाने, हर गाँव की ग्रामसभा का प्रतिनिधि लेकर एक-एक चुनाव-क्षेत्र में निर्वाचन-मंडल बनाने, आगे के निर्माण और विकास के काम को संभालने तथा गांव-गांव में ग्राम-स्वराज्य का नमूना खड़े करने में भी सहायक हो सकती है। अब आवश्यकता इस बात की है कि दीपक से दीपक की लौ बढ़ने की संख्या बढ़ती रहे और ग्राम-स्वराज्य का विचार और योजना व्यापक रूप से और धीरजपूर्वक गांव-गांव में ले जाने का मार्गदर्शन चलता रहे।

विनोबाजी की यात्रा ने रांची जिले के आदिवासी भाइयों के बीच फैले भ्रम का निवारण कर उन्हें सही दिशा में बढ़ने को प्रेरित किया। अब वे छोटी-छोटी जमातों में बँटकर, उलझनों से बचकर और अपनी पूरी शक्ति संगठित कर सही दिशा में विकास करने में लग सकते हैं।

बाबा की यात्रा के क्रम में लोहरदगा और पालकोट में न सिर्फ प्रखण्डदान हुए, बल्कि इस आन्दोलन को आगे बढ़ाने के लिए दोनों जगहों में क्रमश: १६०१ रु० और ९५१ रु० की थैली भी बाबा को समर्पित की गयी। थैली की रकम से बचे हुए प्रखण्डों के दान का कार्य शीघ्रता से आगे बढ़ सकेगा।

बाबा के पड़ावों पर सर्वोदय-साहित्य की भूख व्यापक रूप से दीख पड़ी। लोगों के घर तक जब साहित्य ले जाया जाता है तब वे उसे बड़े चाव से खरीदते हैं। यात्रा में लगभग एक हजार रुपये का साहित्य बिका और 'भूदानयज्ञ' 'मैत्री', 'न्यूज लेटर' 'गाँव की आवाज' आदि पत्रिकाओं के ३० से अधिक ग्राहक बने।

सर्व सेवा संघ की ओर से श्री निर्मला देशपाण्डे, आचार्या, शान्तिसेना विद्यालय, इंदौर, (मध्य प्रदेश) इस क्षेत्र में अनुमण्डलदान में सहायता, मार्गदर्शन और प्रेरणा देने के लिए पिछले महीने भर से लगी हुई हैं और आगे भी लगी रहने को कृतसंकल्प हैं।

बाबा ७ अगस्त तक रांची शहर में ही रहेंगे।

राँची —मथिलाल पाठक
२८-७-'६९

आन्दोलन के समाचार

सर्वोदय-नेता राँची की ओर

सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष श्री एस० जगन्नाथन् ने बिहारदान के आखिरी लक्ष्य को पूरा करने में सर्वोत्तम योगदान देने की अपील करते हुए यह घोषणा की कि वे खुद मार्जरी साइक्स तथा कैथान् के साथ १८ अगस्त को रांची पहुंच रहे हैं। उनकी इस अपील पर सर्वश्री ठाकुरदास बंग, सिद्धराज ढड्ढा, आचार्य राममूर्ति आदि लोग भी रांची पहुंच रहे हैं। श्री जयप्रकाशजी का भी रांची का कार्यक्रम बन गया है।•

चित्तौड़गढ़ में गांधी-शताब्दी क्षेत्रीय शिविर

इन्दौर, २४ जुलाई। ज्ञात हुआ है कि राष्ट्रीय गांधी-जन्म-शताब्दी समिति की महिला-बाल उपसमिति तथा जन-सम्पर्क उपसमिति के संयुक्त तत्त्वावधान में आगामी दिनांक २० से २४ अगस्त तक चित्तौड़गढ़ (राजस्थान) में पश्चिमी क्षेत्र अर्थात् महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान तथा मध्यप्रदेश की जिला गांधी-शताब्दी महिला-बाल उपसमिति की संयोजिकाओं एवं अन्य सामाजिक कार्यकर्ता भाई-बहनों का एक विचार-शिविर आयोजित किया जा रहा है।

शिविर में सम्मिलित होने के लिए शिविरार्थियों को रेलवे-कन्सेशन के अतिरिक्त एक ओर का तृतीय श्रेणी का मार्ग-व्यय दिया जायेगा। भोजन एवं निवास की व्यवस्था समितियों की ओर से की जायेगी।

शिविर में भाग लेनेवाले भाई-बहनों से यह अपेक्षा की गयी है कि शिविरोपरान्त वे अपने-अपने क्षेत्र व जिले में शताब्दी कार्यक्रम संगठित व संचालित करेंगे। शिविर में भाग लेने के लिए विशेष इच्छुक भाई-बहन कु० सन्तोष निगम, पो० कस्तूरबाग्राम (इन्दौर) म० प्र० से सम्पर्क कर सकते हैं। (सप्रेस)•

स्वामी कृष्णदास खप्परवाले का स्वर्गवास

अलीगढ़ जिले के प्रमुख शान्ति-सैनिक और सर्वोदय के वयोवृद्ध लोकसेवक श्री स्वामी कृष्णदास खप्परवाले ७४ वर्ष की आयु में अपने निवासस्थान ग्राम बसई में लम्बी बीमारी के पश्चात् शरीर छोड़ गये!

स्वामीजी सन् १९५४ में हमारे सर्वोदय-परिवार में सम्मिलित हुए थे और अन्त समय तक वे हमारे साथ भूदान-यज्ञ की भूमि का वितरण, साहित्य-प्रचार और शान्ति-कार्य में लगे रहे। अब उनके चले जाने पर स्थान की पूर्ति होना सम्भव नहीं लगता। सर्वोदय परिवार उनकी सेवाओं की सराहना करता है और परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता है कि वह दिवङ्गत आत्मा को शान्ति प्रदान करे! —गंगाधर शास्त्री

www.vinoba.in

विवेकरहित विरोध

बनाम

बुनियादी परिवर्तन-प्रक्रिया

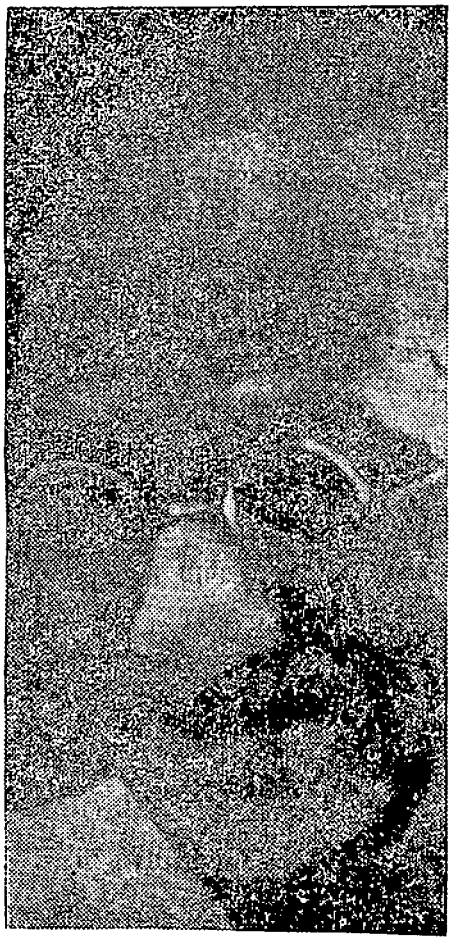

"शासन के खिलाफ विवेकरहित विरोध चलाया जाय तो उससे अराजकता की, अनियंत्रित स्वच्छंदता की स्थिति पैदा होगी और समाज अपने हाथों अपना नाश कर डालेगा।"

—गांधीजी

आज देश में आये दिन घेराव, धरना, लूटपाट, आगजनी, कथित सत्याग्रह की कार्रवाइयाँ लोकतंत्र में सामूहिक विरोध के हक के नाम पर होती हैं।

सर्वोदय-आन्दोलन भी वर्तमान समाज, अर्थ और शासन-व्यवस्था के खिलाफ विद्रोह है। किन्तु, वह इसका एक नियंत्रित, रचनात्मक एवं अहिंसक कार्यक्रम प्रस्तुत करता है।

इसके लिए पढ़िए, मनन कीजिए :—

(१) हिन्द स्वराज्य — गांधीजी

(२) ग्रामदान — विनोबाजी

फिर एक जिम्मेवार नागरिक के नाते समाज-परिवर्तन की इस क्रान्तिकारी प्रक्रिया में योग भी दीजिए।

गांधी रचनात्मक कार्यक्रम उपसमिति (राष्ट्रीय गांधी-जन्म-शताब्दी-समिति)
ढूंकलिया भवन, कुन्दीगरों का भैरू, जयपुर-३ राजस्थान द्वारा प्रसारित।

भूदान-यज्ञ ४-८-'६९ रजिस्टर्ड नम्बर एल. ३५४ [पहले से डाक-व्यय दिये बिना भेजने की स्वीकृति प्राप्त] लाइसेन्स नम्बर पी ३४
www.vinoba.in

पलामू तथा भागलपुर जिलादान सम्पन्न

[पलामू और भागलपुर जिलादान के बाद बिहार के कुल १२ जिलों के जिलादान सम्पन्न हुए। अब सिर्फ ५ जिलों में काम शेष हैं, जिनमें शाहाबाद, राँची और हजारीबाग जिलों के जिलादान शीघ्र पूरा होने की सम्भावना है। —सं०]

बिहार का प्रथम प्रखंडदान था प्रतापपुर (हजारीबाग जिला)। बिहार का दूसरा प्रखंडदान था गारू (पलामू जिला)। उस समय प्रखंडदान प्राप्त करना बड़ा कठिन था, लेकिन स्व० कर्मवीर भाई के प्रयत्न एवं प्रयास से गारू का प्रखंडदान सम्भव हो सका। उस समय पलामू के उपायुक्त श्री कुमार सुरेश सिंह थे। सर्वोदय-आन्दोलन की ओर से कर्मवीर भाई तथा सरकारी अधिकारियों के रूप में श्री कुमार सुरेश सिंहजी, सर्वोदय समाज की स्थापना के लिए दिन-रात ग्रामदान का अलख जगाते रहते थे। सरकारी कार्यालय के राजस्व-विभाग की ओर से ग्रामदान-भूदान के लिए जो परिपत्र तथा आदेश प्रखंडों में भेजे गये थे, उनको मुझे देखने का मौका मिला है। मालूम पड़ता था कि ग्रामदान का विचार सरकारी पदाधिकारियों को सिखाया जा रहा है। उनकी ही देन है कि सरकारी पदाधिकारी दिल खोलकर इस आन्दोलन को मदद करते रहे हैं। आज न उस जिले में स्वर्गीय कर्मवीर भाई हैं, न डा० कुमार सुरेश सिंहजी हैं। एक की आत्मा तथा दूसरे के द्वारा किया हुआ कार्य जिलादान-आन्दोलन को बल दे रहा है। मुझे सैकड़ों गाँवों में जाने का मौका मिला, हजारों लोगों से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। सबने दोनों नेताओं के मुक्त कंठ से गुण गाये। कितनों को जब कर्मवीर भाई के स्वर्गीय हो जाने की जानकारी मेरे द्वारा प्राप्त हुई, तो वे दुःख से विह्वल हो उठे!

इन दोनों के जाने के बाद कुछ दिनों के लिए आन्दोलन मन्द-जैसा हो गया। गत वर्ष के दिसम्बर महीने में पूज्य बाबा पलामू आये। पुनः उत्साह का वातावरण पैदा हुआ। स्वामी सत्यानन्दजी एवं श्री परमेश्वरी झा, अध्यक्ष, जिला ग्रामदान-प्राप्ति समिति के नेतृत्व में आन्दोलन आगे बढ़ने लगा, क्योंकि अभियान में स्वामीजी का कठिन परिश्रम एवं सरकारी अधिकारियों का सहयोग था। ११ प्रखंडों का प्रखंडदान हुआ। माह फरवरी सन् १९६९ तक कुल प्रखंडदान की संख्या १८ हो गयी थी। दैवयोग से स्वामीजी बीमार हो गये, परमेश्वरी बाबू गृह-कार्य में उलझ गये। आन्दोलन का कार्य पुनः बन्द-सा हो गया।

बिहार ग्रामदान-प्राप्ति समिति की बैठक गया में बाबा के सान्निध्य में माह फरवरी में हुई। उसमें हुए निर्णय के अनुसार मुझे पलामू में कार्य करने का आदेश वैद्यनाथ बाबू के द्वारा प्राप्त हुआ। मेरी मानसिक तैयारी इस जिले में काम करने की थी नहीं, फिर भी प्राप्ति-समिति के निर्णय के अनुसार मुझे पलामू आना ही पड़ा। १० मार्च '६९ तक पलामू का जिलादान कराने के संकल्प को लेकर मैं काम पर लग गया। अप्रैल में वैद्यनाथ बाबू का दौरा हुआ। उससे बहुत बल मिला। १६ अप्रैल को संयुक्त समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष श्री कर्पूरी ठाकुर का शुभागमन हुआ। समाजवादी विचार के सभी साथियों का सहयोग मिला। बचे हुए ६ प्रखंडों का प्रखंड-दान २० जून १९६९ को सम्पन्न हो गया। इस प्रकार २० जून १९६९ तक कुल २४ प्रखंडों का प्रखंडदान सम्पन्न हो गया। एक प्रखंड शेष था महुआटाड़। उसका भी प्रखंड-दान पूरा हुआ। —कमल नारायण

भागलपुर—शुरू में भागलपुर जिले में ग्रामदान का तूफान इतना वेग से चला था कि एक पर एक प्रखण्डदान की घोषणा होती चली गयी। बीच में तूफान का वेग मन्द पड़ा। परन्तु जिलादान का संकल्प लोगों को चैन से कैसे बैठने देता? जिन प्रखण्डों का काम शेष रह गया था, उनमें कार्यकर्ता उत्साह तथा उमंग से जुट गये और उन्होंने जिलादान के संकल्प को पूरा किया। भागलपुर जिले को जिलादान के लिए वैचारिक ठोस आधार मिले इसका प्रयास प्रो० श्री रामजीत सिंह करते रहे हैं।

जिलादान की पूर्ति में इस जिले के सरकारी पदाधिकारियों, बिहार खादी-ग्रामोद्योग संघ के कार्यकर्ताओं तथा शिक्षकों का बहुत बड़ा हाथ है।०

भिण्ड जिलादान के निकट

चम्बल घाटी शान्ति-समिति द्वारा भिण्ड जिले में चलाये जा रहे अभियान में अबतक ६६० ग्रामदान मिल चुके हैं। जिले में कुल ८९० गाँव हैं।

२ अक्तूबर '६९ तक ५० जिलादान प्राप्त करने का लक्ष्य

सर्व सेवा संघ की प्रबन्ध समिति के महत्त्वपूर्ण सुझाव

राजकोट। यहाँ २५ से २७ जुलाई तक आयोजित सर्व सेवा संघ की प्रबन्ध समिति की बैठक में २ अक्तूबर '६९ तक जिलादानों की संख्या ५० तक पहुँचाने का लक्ष्य रखकर तूफानी गति से काम आगे बढ़ाने की अपील देशभर में ग्रामदान के काम में लगे साथियों से की गयी। खासकर प्रदेशदान तथा जिलादान के लिए संकल्पित क्षेत्रों में पूरी शक्ति लगाकर इस लक्ष्य तक पहुँचने की सिफारिश करते हुए प्रबन्ध समिति ने यह अपेक्षा व्यक्त की कि आगामी सर्वोदय-सम्मेलन में हर प्रदेश जिलादान की भेंट लेकर पहुँचे।०

वार्षिक शुल्क : १० रु०; विदेश में २० रु०; या २५ शिलिंग या ३ डालर। एक प्रति : २० पैसे।
श्रीकृष्णदत्त भट्ट द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं इण्डियन प्रेस (प्रा०) लि० वाराणसी में मुद्रित।